Postal Registration No. CHD/0107/2024-2026 Posted at MBU Chandigarh RNI No. CHABIL/2000/3469

हिन्दी/अंग्रेजी मासिक पत्रिका



दीन बन्धु सर छोटूराम

जाट लहर

जाट सभा, चण्डीगढ़ के सौजन्य से प्रकाशित

वर्ष 26 अंक 8 30 अगस्त, 2026 मूल्य 5 रुपये

प्रधान की कलम से

महान शखशियत स्व० सत्यपाल मलिक को शत्-शत् नमन

(24 जुलाई 1946–05 अगस्त 2025)



डा. महेन्द्र सिंह मलिक



स्व॰ श्री सत्यपाल मलिक जी की स्वच्छ, बेदाग व पारदर्शी राजनैतिक छवि भारतीय राजनीति के इतिहास में एक अनुकरणीय विशेषकर युवा राजनीतिज्ञों के लिये सदैव मार्गदर्शक व प्रेरणादायक बनी रहेगी। ग्रामीण समाज से उभरकर राजनीति में विशेष आयाम स्थापित करने वाले मलिक साहब समाजवादी लोकतंत्र विचार धारा के युवाओं के बीच बेहद लोकप्रिय रहे है। वे बेधड़क, निष्ठावान व स्वच्छ छवि के ईमानदार राजनेता के तौर पर विख्यात रहेगे जिन्होंने कभी भी सता में रहते हुये भी अपने असुलों व ईमान से कभी समझौता नहीं किया और ईमानदारी व ईमान पर कायम रहे। जम्मू–कश्मीर में गर्वनर के कार्यकाल के दौरान कुछ प्रभावशाली व्यक्तियों द्वारा पेश की गई 1600 करोड़ की गलत डील के दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने से स्पष्ट मना कर दिया और बाद में इसकी शिकायत केन्द्रिय सरकार को की थी।

किसान हित व समाज कल्याण सदैव उनका आर्दश रहा। वे चाहे किसी भी दल और पद पर रहे हो, किसानों के मुद्दों और आन्दोलन पर सरकार से अपना विरोध व्यक्त करते रहे और पार्टी लाईन से हटकर देशहित को सर्वोपरी रखा। वर्ष 2020–21 में 13 मास तक चले आन्दोलन में स्वयं प्रधानमंत्री से आग्रह किया था किसान आंदोलन का समाधान किया जाये। अंत में केन्द्र सरकार को उनके प्रयासों के कारण इस आंदोलन का मुख्य कारण–किसानों के विरूद्ध बनाये गये तीन कृषि कानूनों को वापस लेना पड़ा। वे किसान–काश्तकार व गरीब वर्ग की समस्याओं को भली–भांति समझते थे, इस कारण उनको इस वर्ग से विशेष लगाव रहा। वर्ष 2020 में जब वे गोआ के गवर्नर थे तो उस समय 01 मार्च 2020 को विज्ञान भवन दिल्ली में अर्तराष्ट्रीय जाट संसद के सम्मेलन में बतौर मुख्य अतिथि किसानों को सम्बोधित करते हुये कहा था कि समस्त किसान व ग्रामीण भाई मेरे निवास पर मेहमानीबाजी करें, आप को उचित सम्मान व सतकार दिया जायेगा। इसी प्रकार वर्ष 2019 में हुये पुलवामा के आतंकी आक्रमण पर भी सरकार की अक्षमता जाहिर कर सवाल उठाया था कि यह हमला सरकारी उदासीनता का प्रमाण है। 8 नवम्बर 2021 को मलिक साहब को ग्लोबल जाट शिखर सम्मेलन में आमंत्रित किया गया था और अपने सम्बोधन में उन्होंने 2020–21 के किसान आंदोलन की अनदेखी के सम्बन्ध में केन्द्रिय सरकार को चेतावनी देकर कहा था कि "आप जाट, जट सिक्खों पर विजय प्राप्त नहीं कर पाओगे"। गुरू गोबिन्द सिंह के चार बच्चों की हत्या कर दी गई थी, लेकिन गुरू ने आत्म सर्म्पण करने से इन्कार कर दिया था, अतः आप जाटों से टक्कर नहीं ले सकते।

इस प्रकार के निर्भीक तेवर भाजपा व केन्द्र सरकार को रास नहीं आये और अंत में उनको सी.बी.आई. जांच का सामना करना पड़ा। अंतिम दौर में बीमार होते हुये भी मन वैसा ही मजबूत व अड़िंग रहा और किरू जल विद्युत परियोजना के कथित भ्रष्टाचार में सी.बी.आई. के आरोप पत्र भी उन्हें अपने इरादों से नहीं डिगा सके। मलिक साहब गैर कांग्रेस, गैर भाजपा राजनीति में कभी एक बड़ी राजनैतिक हस्ती की संभावना थी, लेकिन परिस्थितियों ने उन्हें यह अवसर नहीं दिया। उन्होंने पांच दशक के लम्बे राजनैतिक सफर में कई सियासी रंग देखे व विकट परिस्थितियों से गुजरना पड़ा, लेकिन आत्म सम्मान से कभी समझौता नहीं किया। सरकार के प्रति वफादारी और फिर सरकार की कारगुजारी पर सवाल उठाना उनकी राजनीति का अहम रंग रहा।

स्व० सत्यपाल मलिक का जन्म 24 जुलाई 1946 को पश्चिमी उत्तर–प्रदेश के बागपत जिले के हिसवदा गांव में हुआ था। वह एक साधारण किसान परिवार से ताल्लुक रखते थे। उनके पिता का नाम बुध सिंह और माता का नाम जगनी देवी था। बचपन में ही पिता का साया उठ गया और मां ने उनका पालन–पोषण किया। उन्होंने वर्ष 1965 में प्रसिद्ध समाजसेवी स्व० राम मनोहर लोहिमा के समाज सेवी विचारो से प्रेरित होकर राजनैतिक क्षेत्र को अपनाया था जो कि जीवन प्रयन्त उनका राजनैतिक ध्येय बना रहा। उन्होंने मेरठ कॉलेज से बीएससी और एलएलबी की डिग्री हासिल की। वर्ष 1960 के दशक में मेरठ में 5 साल पढ़ाई के बाद 1967 में वे मेरठ कॉलेज के छात्र संघ के प्रेसिडेंट बने और यहीं से उनकी असली राजनीति की शुरुआत हुई।

शेष पेज–2 पर

शेष पेज–1

इसके बाद उनका सम्पर्क पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह के साथ हुआ और उनसे राजनैतिक संबंध बने। उनके साथ 1974 में बागपत से भारतीय क्रांतिकारी दल से विधानसभा चुनाव लड़ा और पहली बार देश के सबसे युवा विधायक बने। उन्हें पंडित उमराव दत्त वेद का समर्थन और प्रचार अभियान मिला था, जो एक प्रमुख स्थानीय राजनीतिक व्यक्ति थे और एक प्रभावशाली चुनावी रणनीतिकार के रूप में व्यापक रूप से जाने जाते थे। उन्होंने चरण सिंह की भारतीय क्रांति दल के उम्मीदवार के रूप में चुनाव सफलता पूर्वक लड़ा था। उन्होंने 42.2 प्रतिशत वोट प्राप्त करके चुनाव जीता और अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी, भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के आचार्य दीपांकर को हराया जिन्हें कुल वोटों का 31.6 प्रतिशत प्राप्त हुआ था।

उनके बाद में वे चौ० चरण सिंह के साथ लोकदल में शामिल हुए और उन्हें पार्टी का जनरल सेक्रेटरी बनाया गया। मलिक साहब को एक समय चौ० चरण सिंह के राजनैतिक वारिस के तौर पर जाना जाता था। वास्तव में उनको राजनीति में प्रवेश कराने व राजनैतिक गुर सिखाने वाले चौ० चरण सिंह थ। आपातकाल में जेल में रहने के बावजूद वे 1984 में कांग्रेस में शामिल हो गये, लेकिन बाद में 1977 में जनता पार्टी टूटने के बाद स्व० श्रीमती इंदिरा गांधी व चौ० चरण सिंह की राष्ट्रहित में राजनैतिक दोस्ती करवाने में विशेष भूमिका निभाई। 1980 में वह राज्यसभा सांसद बने, लेकिन ज्यादा दिन तक वहां नहीं रुके। 1986 में फिर राज्यसभा में वापसी की। बोफोर्स सौदा सुर्खियों में आने के बाद उन्होंने जनता दल में प्रवेश किया और वर्ष 1989 में अलीगढ़ लोक सभा सीट से स्व० वी.पी. सिंह की सरकार में केन्द्रिय मंत्री रहे। अलीगढ़ लोकसभा क्षेत्र मलिक साहब की सांसद के तौर पर आखरी पारी थी और कुछ समय समाजवादी पार्टी में रहने के बाद वर्ष 2004 में भारतीय जनता पार्टी में प्रवेश किया और बागपत से चौ० अजीत सिंह के विरूद्ध लोकसभा चुनाव लड़ा। वर्ष 2012 में उन्हें बीजेपी का राष्ट्रीय उप–प्रधान चुना गया और वर्ष 2014 के लोकसभा चुनाव में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के विशेष चुनाव अभियान के अभिन्य अंग रहें। लेकिन असली पहचान उन्हें 2018–19 में मिली जब वह जम्मू–कश्मीर के गवर्नर बने क्योंकि 5 अगस्त 2019 को जम्मू–कश्मीर से अनुच्छेद 370 हटाकर इस आतंकवाद पीड़ित राज्य को अलग पहचान दिलान में उनकी विशेष भूमिका रही।

सत्यपाल मलिक ने अपने राजनैतिक दौर में कई राज्यों में गवर्नर की सवैधानिक भूमिका निभाई। वह 30 सितंबर 2017 से 21 अगस्त 2018 तक बिहार के गवर्नर रहे। इसके बाद उन्हें 21 मार्च 2018 से 28 मई 2018 तक ओडिशा के गवर्नर का अतिरिक्त प्रभार दिया गया। 23 अगस्त 2018 से 30 अक्टूबर 2019 तक वह जम्ब–कश्मीर के गवर्नर रहे। इसके बाद 3 नवंबर 2019 से 18 अगस्त 2020 तक वह गोवा के गवर्नर बने। 18 अगस्त 2020 से 3 अक्टूबर 2022 तक वह मेघालय के गवर्नर रहे।

इस समय स्व० मलिक साहब हमारे बीच नहीं रहे उनकी असमय जुदाई से समस्त समाज विशेषकर किसान व कृषि पर आधारित वर्ग को एक असहनीय आघात लगा है, लेकिन उनकी समाजवादी विचारधारा, धर्मनिरपेक्ष छवि एवं किसान परस्ती निडर जीवन शैली समस्त समाज व ग्रामीण वर्ग के लिये प्रेरणास्रोत बनी रहेगी। दीनबन्धु चौ० छोटूराम, पूर्व प्रधान मंत्री, स्व० उप–प्रधान मंत्री चौ० चरण सिंह व स्व० जननायक चौ० देवीलाल के बाद किसान काश्तकार–कामगार व गरीब वर्ग के हितो के लिये सार्वजनिक तौर से आवाज उठाने वाले एक दंबग, निष्ठावान व स्वच्छ/पारदर्शी छवि के राजनैतिक व्यक्तित्व स्व० श्री सत्यपाल मलिक की जुदाई समस्त ग्रामीण समाज व आम जनता के दिलो में हमेशा के लिये यादगार बनी रहेगी। अन्तिम विदाई के समय भी उन्हें राजकीय सम्मान से विदा किया जाना चाहिए था। इस प्रशासनीक अनदेखी के लिए कौन जिम्मेवार है?

डॉ० महेन्द्र सिंह मलिक, आई.पी.एस. (सेवा निवृत)
पूर्व पुलिस महा निदेशक हरियाणा,
प्रधान अखिल भारतीय शहीद सम्मान संघर्ष समिति व
जाट सभा, चंडीगढ़ व पंचकूला एवं
चेयरमैन, चौ० छोटूराम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

श्री बलराम जाखड़ के जन्मदिवस पर विशेष

– डा. राजेन्द्र कुमार, (मो० 9897821175)

गीता का कथन है–

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्ततदेवेतरो जनाः।
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदुनवर्तते ।।

अर्थात जैसा–जैसा आचरण समाज के श्रेष्ठ लोग करते हैं वैसा ही साधारण लोग भी करते हैं। जिन–जिन बातों को ये लोग अपने मन–वचन–कर्म से प्रमाणित करते हैं, उन्हीं का अनुसरण समाज करता है। व्यक्ति के व्यक्तित्व की जैसी छाप व्यक्ति या समाज पर पड़ती है उसी के आधार पर उसके जीवन का मूल्य आंका जाता है। महापुरुषों का जीवन हमें याद दिलाता है कि हम अपने जीवन को उदात्त बना सकते हैं और समय की रेत पर अपने पैरों के निशान छोड सकते हैं। उनके द्वारा किये गये कार्य आने वाली पीढ़ियों को समाज में गौरवान्वित करने के साथ–साथ प्रेरणादायक भी सिद्ध होते हैं।

इस दृष्टि से अगस्त का महीना हमारे लिए विशेष महत्व रखता है। इस महीने में हमारे दो प्रेरक महापुरुषों का आविर्भाव हुआ था 23 अगस्त को श्री बलराम जाखड का और 24 अगस्त को श्री रामनिवास मिर्धा का।

6 फुट 5 इंच ऊँची आकर्षक देहयष्टि और भव्य व्यक्तित्व के धनी डॉ. बलराम जाखड़ एक सुयोग्य प्रशासक थे और लम्बे समय तक अध्यक्ष, लोक सभा तथा राज्यपाल जैसे उच्चतम संवैधानिक पदों के निर्विवाद दायित्व निर्वहन के साथ–साथ केन्द्रीय कृषि मंत्री तथा बेहतरीन किसान और किसान नेता के रूप में याद किया जाता है।

"असली भारत गाँवों में बसता है" गांधी जी के इस ऐतिहासिक कथन के डॉ. बलराम जाखड़ सच्चे अनुयायी थे। उनके लिए गाँव भौतिकवादी विकर्षणों और विविधताओं से मुक्त वातावरण में प्रकृति के साथ एक होने का एक अनूठा अवसर प्रदान करता था, जो शहरी जीवन में नहीं मिलता। लेकिन इसके साथ–साथ वे गांवों के आधुनिकीकरण के लिए समान रूप से काम करने के लिए प्रतिबद्ध थे जिससे ग्रामीण जीवन में सुधार हो सके।

उनके पिता चौधरी राजाराम जाखड़ की प्रबल इच्छा थी कि उनका पुत्र अच्छी शिक्षा प्राप्त करे। इसके लिए अपने गांव पंजकोसी से चौथी कक्षा के बाद बलराम जी की दसवीं तक की शिक्षा ग्रामोत्थान विद्यापीठ संगरिया में हुई, जहां संस्कृत और इतिहास उनके सबसे प्रिय विषय रहे। उन्होंने लाहौर के फोरमैन क्रिश्चियन कालेज सें बी.ए. उत्तीर्ण किया, जो तत्कालीन पंजाब के प्रतिष्ठित कालेजों में से एक था। वहीं भारतीय राजनीति में युवा बलराम की रुचि उत्पन्न हुई। उन्होंने दुनियाभर के प्रसिद्ध राजनीतिज्ञों के विचारों का अध्ययन किया, गांधी जी ने उन्हें सबसे अधिक प्रभावित किया। बी.ए. ऑनर्स संस्कृत उत्तीर्ण करने के बाद उन्होंने स्वेच्छा से परिवार का व्यवसाय खेती अपनाया। यह काम उन्होंने स्वेच्छा से चुना था और पिता के असामयिक निधन से उत्पन्न होने वाली आर्थिक समस्याओं के कारण यह आवश्यक भी था। लेकिन आरम्भ में पंजकोसी में पुराने तौर–तरीके से खेती होने के कारण उन्हें खेती का काम बड़ा नीरस लगता था। 1965 के आसपास पंजाब में हरित क्रान्ति आई और पंजकोसी में सर्वप्रथम बलराम जी ने उससे लाभ उठाने का निश्चय किया। कपास का उत्पादन प्रति एकड़ तीन मन से बढ़ाकर 25 मन और गेहूँ का प्रति एकड़ दस मन से बढ़ाकर 55–60 मन लेने में वे सफल रहे थे।

बलराम जी ने बंजर भूमि में उर्वरकों का प्रयोग करके उसे कृषि योग्य बनाया और उसमें अंगूर लगाये। जहाँ बंजर रेगिस्तान था, कभी कोई फसल नहीं हुई थी वहाँ उनके फलोद्यान खिल उठे। संतरा, आड़ू, माल्टा और अन्य फल लगने लगे। उस जमाने में यह बिल्कुल नई बात थी। वे क्षेत्र में विख्यात हो गये और दूर–दूर से किसान उनसे सलाह लेने आने लगे। लोग उन्हें "कॉटन किंग" और "अंगूर दा बादशाह" पुकारने लगे। उनके परिश्रम को मान्यता मिली और 1975 में उन्हें भारत के राष्ट्रपति द्वारा "अखिल भारतीय उद्यान पण्डित" के पुरस्कार से नवाजा गया। उसी वर्ष उन्हें वाशिंगटन में आयोजित अन्तरराष्ट्रीय कृषि उत्पादक सम्मेलन में भारतीय प्रतिनिधि मण्डल का नेतृत्व करने का अवसर मिला।

डॉ. जाखड़ पहली बार 1972 में पंजाब विधान सभा के लिए कांग्रेस के प्रत्याशी के रूप में भारी मतों से निर्वाचित हुए। तत्कालीन मुख्यमंत्री ज्ञानी जैल सिंह ने उन्हें सहकारिता, सिंचाई एवं विद्युत उपमंत्री बनाया। उनके कार्यकाल में पंजाब में सहकारिता, सिंचाई और विद्युत के क्षेत्रों में बहुत प्रगति हुई, जनता को, विशेषकर किसानों को, बहुत लाभ मिला।

श्रीमती इन्दिरा गांधी सरकार द्वारा लगाई गयी इमरजेन्सी के कारण चली कांग्रेस विरोधी लहर के परिणामस्वरूप उत्तर भारत में कांग्रेस बुरी तरह पराजित हुई लेकिन डॉ. जाखड़ 1977 के पंजाब विधानसभा चुनाव में कांग्रेस टिकट पर भारी मतों से विजयी हुए। पंजाब में

जिंदगी से मिला अनुभव बाजार में नहीं बिकता है, ज्ञान वही है जो आपके व्यवहार में दिखता है।

अकाली सरकार बनी। वे विधानसभा में विपक्ष के नेता चुने गये। उन्हें इन्दिरा गांधी के नेतृत्व में पूर्ण विश्वास था, अतः वे उनके साथ कांग्रेस (आई) में ही रहे।

1980 के लोकसभा चुनाव में संसद में कांग्रेस (आई) को भारी बहुमत मिला, श्रीमती इन्दिरा गांधी प्रधानमंत्री बनीं। डॉ. जाखड़ फिरोजपुर से सांसद चुने गये, उन्होंने सदस्यता की शपथ संस्कृत में ली और 22 जनवरी 1980 को लोकसभा के अध्यक्ष पद पर निर्वाचित किये गये। संसद के कार्यसंचालन में उन्होंने अपूर्व दक्षता, निष्पक्षता, विवेक, धैर्य, अनुशासन के साथ–साथ अवसरानुकूल शिष्ट हास्य के साथ लोकसभा अध्यक्ष पद के गौरव और संसदीय मर्यादा को नये आयाम प्रदान किए। इसलिए आठवीं लोकसभा के लिए सीकर से निर्वाचित होकर पुनः सर्वसम्मति से लोकसभा के अध्यक्ष चुने गये। अपने कार्यकाल में उन्होंने अनेक नवीनताओं का समावेश किया, संसद पुस्तकालय और उसमें दुर्लभ पुस्तकों का संयोजन तथा संसदीय कार्यों में स्वचालन और कम्प्यूटर के प्रयोग का आरम्भ उन्हीं की देन है।

1991 में वे फिर सीकर लोकसभा क्षेत्र से चुने गये और प्रधानमंत्री पी.वी. नरसिंहराव ने उन्हें अपने मंत्रिमण्डल में कृषि मंत्रालय का मुखिया बनाया। स्वयं कृषक होने के नाते वे किसानों की समस्याओं से भलीभांति परिचित थे। उन्होंने कृषि और कृषकों के हित के लिए अनेकानेक कार्यक्रम लागू किये।

30 जून 2004 को उन्हें मध्य प्रदेश का राज्यपाल नियुक्त किया गया और वे 29 जून 2009 तक इस पद पर रहे। वे भारत कृषक समाज और जलियांवाला स्मारक न्यास की प्रबंध समिति के अध्यक्ष भी रहे। डॉ. जाखड़ बहुत अच्छे वक्ता थे। अपनी सभी व्यस्तताओं के बावजूद उन्होंने राष्ट्र भाषा हिन्दी को मान, अभिमान और सम्मान देने के आन्दोलन को सर्वोच्च प्राथमिकता दी। वे तृतीय विश्व हिन्दी सम्मेलन की राष्ट्रीय समिति के अध्यक्ष और अखिल भारतीय संस्कृत शिक्षा सम्मेलन के सभापति थे।

डॉ. जाखड़ सूरजमल स्मारक शिक्षा संस्था के कार्यक्रमों से बहुत गहराई से जुड़े थे। जब वे लोकसभा अध्यक्ष निर्वाचित हुए, तो 16 मार्च 1980 को सूरजमल स्मारक शिक्षा संस्था द्वारा आयोजित समारोह में मुख्य अतिथि बने और तब से जीवन पर्यन्त वे संस्था के मार्गदर्शक, दार्शनिक और मित्र बने रहे। 3 फरवरी 2016 को बानवें वर्ष की आयु में इस संसार को छोड़ गये।

महाराजा जवाहर सिंह (1764-1768)

– जयपाल सिंह पूनियां, एम.ए.इतिहास
एच.एफ.एस (सेवानिवृत) (मो० 9466110050)

महाराजा जवाहर सिंह सन् 1764 से 1768 ई0 – 25 दिसम्बर 1763 ई० को रूहेले सैनिकों द्वारा एकाएक महाराजा सुरजमल की मुत्यु हो जाने पर जाट राज्य का प्रधानमन्त्री सेनापत्ति तथा भरतपुर किले का किलेदार बलराम अपने भांजे नाहर सिंह को साथ लेकर, उसी रात सेना के साथ कूच करके तीस घंटे में ही 27 दिसम्बर को सुरजमल की मुत्यु का दुःखद समाचार लेकर डींग पहुँच गया। जवाहर सिंह को भी यह सूचना मिली जब वह फरुखनगर के दुर्ग में था। जवाहर सिंह ने अपने भाई नाहर सिंह व मन्त्रियों को एक धमकी भरा सन्देश भेजा कि तुम डरपोक हो एंव अयोग्य हो, जो अपने महाराजा का साथ छोड़कर चले आए। जोकि एक निन्दनीय कार्य है। इसके लिए तुम्हें धिक्कार है। उनका बदला लेने के बजाय तुम सोच रहे हो कि अब इनका उत्तराधिकारी कौन होगा। इस समय में अपने जन्म अधिकार का दावा नहीं करूंगा और मैं अपनी छोटी सी सैनिक टूकड़ी के साथ अपने पिता के घातक पर आक्रमण करके उनकी मृत्यु का बदला लूँगा। उसके बाद ही विचार करूँगा कि पिता जी की गद्दी पर बैठने का यथार्थ उत्तराधिकारी कौन है। (वैडल पृ० 95 फाल 2. पृ0355 कानूनगों Jats Page 92) Thakur Desh Raj Jat History

जवाहर सिंह की इस एक ही धमकी से सभी दरबारी मन्त्री सेनापति नाहर सिंह भयभीत हो गए। नाहर सिंह अपने परिवार को लेकर धौलपूर भाग गया। जवाहर सिंह भी तुरन्त डींग आ गया और बलराम ने आत्मसर्मपण कर दिया और जवाहर सिंह के उत्तराधिकार की घोषण कर दी। साहसी वीर जवाहर सिंह ने दिसम्बर (के आखरी सप्ताह में) 1763 ई० में भरतपुर की गद्दी पर बैठा। (कानूनगो जाट स पृ० 92 यदुनाथ 277) वीर जवाहर सिंह ने अनेकों लड़ाईयों लड़ी जिनमें धसेरा का युद्ध, कुम्हेर के घेरे के समय खाण्डेराव का सामना और भरतपुर की रक्षा, अपने पिता के साथ जाकर होडल, पलवल, मेवात और अलवर पर अधिकार, अब्दाली से चौमुहा, चौर, बल्लबगढ़ में युद्ध और फरूखनगर पर अधिकार आदि मुख्य है।

<u>अपने पिता का बदला लेने हेतु दिल्ली पर चढ़ाई</u>

1764 ई० महाराजा जवाहर सिंह ने अक्तुबर, 1764 के अन्त में बड़ी सेना जिसमें 6000 सैनिक 100 तोपे थी और

25000 मराठे सैनिक होल्कर की अध्यक्षता में तथा 15000 सिख घुडसवार शामिल थे। नजीबुदौला ने रूहेलाओं और अब्दाली की मदद के लिए प्रार्थना की लेकिन उसकी मदद में जाटों की सेना के भय से कोई नही आया। इस समय राजमाता किशोरी देवी, फ्रांसीसी जनरल समरू भी जवाहर सिंह के साथ थे। राजमाता किशोरी देवी ने सैनिकों के साथ अग्रिम पंक्ति में रहकर युद्ध का संचालन जवाहर सिंह के साथ ही किया। इस लड़ाई में यू.पी. और हरियाणा के जाटों ने भी जवाहर सिंह का साथ बढ़ चढ़कर दिया। मुगल डरते दिल्ली के लाल किले में घुस गए। मुगलों ने झूठी खबर फैला कर जाटों को डराना चाहा कि अब्दाली भी लाहौर पहुँच चुका है। इससे यह हुआ कि सिख पंजाब की रक्षा के लिए वापिस चले गए लेकिन जाटों में कोई भय का नामो निशान कहीं भी नहीं था। लाल किले का दरवाजा नहीं टूटा क्योंकि दरवाजे पर बड़ी लोहे की कीलें लगी हुई थी। तो माता किशोरी देवी ने अपने भाई बलराम उर्फ बल्लू सिंह को कहा कि भाई भात भरने का समय आ गया है। कहते हैं कि साधनों की कमी की वजह से खुटेल (कुन्तल) कुन्तल गोत्र का जाट पुस्कर सिंह और बल्लू सिंह ने अपने शरीरों पर बोरियाँ लपेटकर दरवाजे की कीलों के सामने अपनी छाती अड़ा दी और तब हाथीयों ने टक्कर मारी और किले के गेट तोड़ कर अफगानों को गाजर मूली की तरह काट डाला। दिल्ली को जीतने के बाद जब जवाहर सिंह को दिल्ली की गद्दी पर बैठाया जाने लगा तो एक ब्राह्मण ने शुभ मुहुर्त न होने का बहाना बनाकर महाराजा जवाहर सिंह को दिल्ली की गद्दी पर बैठने से टालमटोल करवा दी और जाटों ने दिल्ली को खूब लूटा यहाँ तक कि लाल किले के दरवाजे तक हाथियों पर लाद कर भरतपुर ले गए। शाही सेना को बुरी तरह से जवाहर सिंह ने हराया। कानूनगो जाटस पृ 94.95. जाट इतिहास डा० देशराज पृ० 557 पृ० 332 लेखक आचार्य भगवान देव, जाटों का उत्कर्ष पृ० 442 योगेन्द्र पाल शास्त्री क्षत्रियों का इतिहास पृ० 135–36, History of Jat Warrior by Capt- Dalip Singh Ahlawat Page 704 to 707, जाट योद्धाओं का इतिहास P-434 to 437 by Ch. Bhalle Ram Beniwal उपरोक्त सभी घटनाओं से लेखक भी सहमत है।

महाराजा जवाहर सिंह का प्रताप–सूर्य शिखर पर था।

वह अपने बड़े हुए राज्य प्रबन्ध की उतनी चिंता में नही था जितना कि बढाने में। महाराजा जवाहर सिंह की राजपुतों को अपने से ज्यादा ऊँचा नही समझते थे। बल्कि अपने को यादूवंशी (चंद्रवंशी) होने से सूर्यवंशी और चन्द्रवंशी राजपूतों से ऊँचा समझते थे।

एक बार जयपुर के राजा के सलाहकार ने जवाहरसिंह को कहा कि महाराज हमें उनकी इज्जत करनी चाहिए क्योंकि वे श्री राम के वंशज है क्योंकि उन्होंने समुद्र पर पुल बांधा था। तो महाराजा जवाहर सिंह ने कहा कि यह कौन सी बड़ी बात है। हमारे पूर्वज श्री कृष्ण जी महाराज तो गोवर्धन पर्वत को एक उंगली पर 7 दिन थामे रहे थे।

एक ब्राह्मण के कहने पर दिल्ली की राज गद्दी पर न बैठकर एक अशुभमुहुर्त के भय से। यह महाराजा जवाहर सिंह की एक बहुत बड़ी भूल थी। यह समय दोबारा कभी नहीं आया जाटो को दिल्ली की गद्दी पर बैठने का। दोबारा मौका आया तो चौ० चरण सिंह और चौ० देवी लाल भी यही गल्ती कर गए क्योंकि शिवजी महाराज के वंशजों (भोले जाटों) ने हमेशा दूसरों का ही भला चाहा है और भला किया भी है।

नाहर सिंह को हराना

सन् 1765 में सेनापति समरू की सलाह मानकर जवाहर सिंह ने एक बड़ी और योग्य सेना खड़ी कर ली थी। नाहर सिंह ने मल्हार राव को भरतपुर पर अधिकार कराने हेतु पत्राचार शुरू कर दिया क्योंकि मल्हार राव होल्कर जवाहर सिंह से जलता था और उसने नाहर सिंह को अपना धर्म पुत्र बना लिया था। अपनी सेना धौलपुर दुर्ग की रक्षा हेतु भेजी दी। जवाहर सिंह भी अपनी सेना लेकर चंबल के किनारे पहुँच गया । मराठा सेना आगे बढ़ गई थी जिसकी एक डिविजन जवाहर सिंह ने कैद कर ली। दिल्ली को जीतने के बाद मल्हार राव होल्कर भी जाटों के विरूद्ध नजीबुदौला की तरफ हो लिया था और नजीबुदौला और जाटों की सन्धि करवा दी थी। इस लड़ाई में मल्हार राव और नाहर सिंह की हार हुई और नाहर सिंह और उनकी रानी जहर खाकर मर गए। उनका बाकी परिवार जयपुर भाग गया।

जवाहर सिंह का रघुनाथ राव से युद्ध सन् 1767 ई०

धौलपुर जीतने के बाद जवाहर सिंह के मन में मराठों को राजपुताने से बाहर करने की बात घर कर गई। गोहद राणा छत्र पाल की सहायता करके मराठों की शक्ति क्षीण करने की ठान ली। माधोराव को यह पता चला तो उसे इसका भय हुआ। मराठों ने गोहद पर हमला कर दिया। गोहद राणा और महाराजा जवाहर सिंह ने मिलकर मराठों को हराया और रघुनाथ राव ने जवाहर सिंह से संधि कर ली। अपनी सीमा को भी जवाहर सिंह ने संधि के तहत बढ़ा लिया। अंग्रेजी बंगाल के गवर्नर लार्ड क्लाइव ने 19 अगस्त, 1765 में महाराजा जवाहर सिंह को पत्र भेजा कि अपनी सेना

आपके जीवन की खुशी आपके विचारों की गुणवत्ता पर निर्भर करती है। इसीलिए सकारात्मक सोचें और खुश रहें।

से समरू जनरल को निकाल दे तो भरतपुर की बाहरी सीमाओं की रक्षा करेंगे लेकिन जवाहर सिंह ने इस ओर ध्यान नहीं दिया। कई बार आग्रह करने पर अंग्रजों से संधि कर ली लेकिन फ्रांसीसी सेनापति समरू को नहीं निकाला क्योंकि वह एक बहादुर, योग्य, रणनीतिकार योद्धा था।

पुष्कर तीर्थ यात्रम और महारानी किशोरी स्नान (1767 ई०)

महाराजा जवाहर सिंह अपनी सेना के साथ गाजेबाजो व नगाडे बजाता हुआ 6 नवम्बर 1767 को पुष्कर अपनी माता किशोरी देवी को स्नान करवाने के लिये पहुंच गया। वहां पर राजपूतों के सिवाय किसी और को स्नान की इज्जाजत नहीं थी। लेकिन किसी भी राजपूत की हिम्मत नहीं हुई की जवाहर सिंह को रोक दे। सभी राजपूत दुम दबाकर अपने महलों में घुसकर तमाशा देखते रह गये। ये जाटों के शौर्य का उच्चतम शिखर था। जिसको जवाहर सिंह ने ओर ऊंचा कर दिया। महारानी ने सेना सहित पुष्कर में स्नान किया। वहां पर जाटों के नाम से एक घाट और मन्दिर बनवाया और गरीबों को बढ़चढ़ कर दान दिया। इतना दान दिया कि आज तक कोई भी राजपूत या कोई अन्य इतना दान नहीं दे पाया। जाटों का घाट ब्रह्मा जी के मन्दिर के सामने है।

राजपूतों की स्त्रियों के अतिरिक्त कोई भी औरत लाख की बनी चूडियां नहीं पहन सकती थी और अपने घाघरों व दामन में नाडे नही डाल सकती थी। केवल मूंज की रस्सी बनाकर ही घाघरें व दामन के ऊपर बांधा करती थी। पुरुषों को सिर पर पगडी बाधने की आज्ञा नहीं थी। राजपूतों के सामने जाट चारपाई पर नहीं बैठ सकते थे। महाराजा जवाहर सिंह ने आम जनता पर से ये पाबन्दियां हटाने के लिये अजमेर शहर से कई लाखों की मात्रा में लाख की बनी चूड़िया नाड़े और पगडियां आदि खरीद कर पुष्कर में स्नान करके सभी स्त्री व पुरुषों में मुफ्त बाट दी। लाखों औरतों को नाडे डलवाये, चुड़ियां पहनाई तथा लाखों लोगों को पगडियां बन्धवाई। कहते है महाराजा ने लाख की चूड़ियां बेचने वाले व्यापारी से पूछा तो उसने उत्तर दिया कि महाराज ये आपके काम की नहीं, ये तो लाख की है। महाराज ने मूल्य समझकर लाख रुपये उसको देकर वे सारी चूड़ियां ही खरीद ली और सभी औरतों में बाट दी। आम सभी जनता को पक्के घाटों पर स्नान करने की आज्ञा महाराजा जवाहर सिंह ने दी और उपरोक्त नहाने व रहन–सहन संबंधी गंदी प्रथाओं के विरूद्ध घोर निन्दा करके लोगों को राहत दिलवाई। राजपूत इस प्रकरण से अपनी बेईज्जती महसूस करने लगे और इन गंदी प्रथाओं को फिर बढ़ावा नहीं दिया। महारानी किशोरी देवी को सोने से तौला गया और महारानी ने ये सोना सभी गरीबों में बाट दिया।

उपरोक्त सभी कार्यों को देखकर राजपूतों ने पुष्कर में सभा बुलाई, इस सभा में जाटों को नहीं बुलाया। राजा माधो सिंह ने कहा कि जवाहर सिंह ने तो राजपूतों की मूंछ काट ली। राजा विजय सिंह ने कहा कि वे भी हिन्दु हैं कोई कितना भी दान दे सबको बराबर का हक है। राजपूत सामने से युद्ध करने में कतराते रहे लेकिन वापसी में जवाहर सिंह ने तंग पहाड़ों के रास्तों से होकर गुजरना था। राजपुतों ने जयपुर के राजा माधो सिंह के साथ मिलकर जवाहर सिंह का रास्ता रोक लिया। जाटों और राजपूतों में घोर युद्ध हुआ। भरतपुर के दो विदेशी जरनलों की चतुराई से यह मावण्डा का युद्ध जाटों ने जीत लिया। जयपुर सेनापति के प्रधान की तीन पीढ़ियां इस युद्ध में खप गई। केवल 8–10 वर्ष के दो बच्चे ही उनके पीछे रह गये थे। राजपूतों को इस युद्ध में भारी हानि उठानी पड़ी। इस प्रकार राजपूतों की जाटों के सामने आंख उठाकर देखने की हिम्मत नहीं हुई। तोरावाटी और जयपुर के जाटों ने इस लड़ाई में जवाहर सिंह का साथ नहीं दिया। क्योंकि वे राजपूतों के नीचे काफी दबे हुये थे। उनका स्वाभिमान ही नहीं जागा। जवाहर सिंह ने जब दिल्ली पर चढ़ाई की तो दिल्ली के चारों तरफ के जाटों ने खुलकर तन–मन–धन से जवाहर सिंह का साथ दिया था। इस युद्ध में जयपुर राजा को बहुत हानि हुई थी। उनकी आधे से ज्यादा फौज खत्म हो गई थी और जवाहर सिंह को वे रोक नहीं पाये। राजा जवाहर सिंह सफलता पूर्वक भरतपुर पहुंच गये।

स्रोत– लेखक ठाकुर देशराज, योगेन्द्रपाल शास्त्री, प्रमेश शर्मा, जाट इतिहास लेखक रामस्वरूप जून, लेखक डॉ० भीम सिंह दहिया प्राचीन जाट राजा। लेखक कैप्टन दलिप सिंह अहलावत, जाट योद्धाओं का इतिहास। लेखक भी इससे सहमत है।

महाराजा जवाहर सिंह की मृत्यु 1768 ई०

जून 1768 ई० में महाराजा जवाहर सिंह आगरा के किले के द्वार पर किसी घातक दुश्मन द्वारा धोखे से मारे गए "ब्रजेन्द्र वंश भास्कर में उस घातक का नाम सुजात मेव लिखा है।" इमाद–उद्–सादात का लेखक लिखता है कि महाराजा जवाहर सिंह ने केवल अजां देने पर एक मनुष्य की जीभ निकलवा दी थी। कोई भी कसाई मास नहीं बेच सकता था। आगरे की मस्जिद में अनाज की दुकाने खुलवा दी थी। इससे यह सम्भावना है कि किसी कट्टर मुस्लमान ने ही उन्हें मारा होगा। महाराजा जवाहर सिंह की मृत्यु से जाटों का सितारा हिन्दु धर्म ध्वज रक्षक जिसकी उस समय बहुत आवश्यकता थी, समय से पहले ही विलुप्त हो गया।

जुबान और दिमाग ज्यादा तेज चलने से रिश्तों की रफ्तार कम हो जाती है।

प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के नायक बल्लभगढ़ नरेश राजा नाहर सिंह

– बी.एस. गिल, महासचिव
जाट सभा (मो० 9888004417)

बल्लभगढ़ नरेश, जाट केसरी नाहर सिंह अंग्रेजों से सख्त नफरत करते थे। उन्होंने तात्या टोपे, पेशवा नाना साहब, बिजरौल के बाबा शाहमल और शामली के मोहर सिंह के साथ मिलकर अंग्रेजों को भारत से बाहर भगा देने की योजना बनाई थी। उनकी उपस्थिति में ही मथुरा में स्वामी पूर्णानन्द की कुटिया में सर्वसम्मति से 30 मई 1857 का दिन भारत में क्रांति का दिन निश्चित कर दिया गया था।

राजा नाहर सिंह 30 मई 1857 को आहूत सम्पूर्ण क्रांति को सफल बनाने की तैयारियों में जुटे थे। लेकिन मेरठ के सैनिकों ने समय से पूर्व ही क्रांति कर दी। 11 मई को राजा नाहर सिंह को मेरठ की सेनाओं के दिल्ली पहुंचने का समाचार मिला, तो उन्होंने अपने सेनापति चौ. मोहन सिंह को इन विद्रोही सैनिकों का स्वागत करने के लिए दिल्ली भेजा। वे स्वयं भी 16 मई को अपने साथ 500 सैनिकों का जत्था लेकर दिल्ली को प्रस्थान कर गये।

राजा नाहर सिंह ने बहुत ही व्यवस्थित ढंग से दिल्ली की सुरक्षा का भार वहन किया। उनके सुझाव पर बादशाह ने हरियाणा सर्वखाप पंचायत के नाम सहायता भेजने के लिए एक पत्र सौरम भेजा था। बादशाह के इस पत्र को पाते ही हरियाणा सर्वखाप पंचायत ने सौरम और रोहतक आदि में सभाएं आयोजित कर सम्पूर्ण हरियाणा से नौजवान एकत्र किये और एक साथ में हरियाणा सर्वखाप पंचायत के लगभग 12 हजार नौजवानों की पहली खेप दिल्ली पहुंचकर शाही सेना में शामिल हो गयी। हरियाणा सर्वखाप पंचायत में जाटों का प्रभुत्व था। अतः इन नौजवानों में से लगभग 10 हजार अकेले जाट थे।

राजा नाहर सिंह ने सर्वखाप पंचायत के नौजवानों के साहस के बल पर दिल्ली में ऐसा चक्रव्यूह रचा कि अंग्रेज बुरी तरह पिटकर दिल्ली से भाग निकले। राजा नाहर सिंह ने 23 जून को दिल्ली को अंग्रेजों से पूरी तरह से मुक्त करा लिया। राजा नाहर सिंह और रूहेलों की सेना दिल्ली की पूर्वी सीमा पर और मेरठ के सैनिक दिल्ली के उत्तरी भाग अर्थात् कश्मीरी गेट पर नियुक्त थे। इस प्रकार दो ओर से दिल्ली पूरी तरह से सुरक्षित थी।

अंग्रेजों ने दिल्ली से निष्कासन के बावजूद भी हिम्मत नहीं हारी। दिल्ली छावनी का क्षेत्र अभी उनके कब्जे में था। कर्नल बर्नाड और ब्रिगेडियर विलसन, मेजर विलसन, ग्रेटहेड, कैप्टन हडसन आदि अधिकारी दिल्ली को पुनः हासिल करने के लिए जी–जान एक कर रहे थे। उन्होंने मिर्जा इलाहीबख्श को, जो बादशाह की चहेती पोती गुलबानों की .पा से एक मामूली कहार से मुख्य दरबारी बना था, बादशाह की गिरतारी के बदले बेशुमार दौलत देने का वादा कर अपनी ओर मिला लिया था।

अंग्रेजों का सामना कुशल रणनीतिकार राजा नाहर सिंह से था। राजा नाहर सिंह ने दिल्ली और राजपरिवार की सुरक्षा को ऐसा अभेद्य घेरा बना दिया था कि अंग्रेज इस घेरे को तोड़ने में सक्षम नहीं थे। अंग्रेजों ने दिल्ली को पाने के लिए मई में तीन बड़े आक्रमण किये, जो नाहर सिंह और जाट लड़ाकों के कारण असफल रहे। अंग्रेज नाहर सिंह की प्रचण्ड युद्ध कला देखकर चकरा गये। यूरोपियन शैली की युद्ध नीति से प्रशिक्षित राजा नाहर सिंह की सेना का चक्रव्यूह अंग्रेज न भेद सके। नाहर सिंह ने अंग्रेजों को हर मोर्चे पर करारी मात दी।

राजा नाहर सिंह ने दिल्ली की पूरी मोर्चाबंदी को बारीकी से संभालने के साथ ही दिल्ली से लेकर बल्लभगढ़ तक की व्यवस्था को भी व्यवस्थित किया। उन्होंने दिल्ली से बल्लभगढ़ तक तक अनेक सैनिक चौकियां स्थापित की थीं जो दिल्ली और बल्लभगढ़ की सुरक्षा व्यवस्था को चुस्त–दुरुस्त रखती थीं।

सर जॉन लॉरेंस ने आगरा से आयी कुमुक के बल पर दिल्ली के पूर्वी भाग पर आक्रमण कर दिल्ली को अपने कब्जे में लेना चाहा, किंतु वह राजा नाहर सिंह की रणनीति के सम्मुख सफल नहीं हो सका। सर जॉन्स लॉरेंस ने लार्ड कैनिंग को एक पत्र में लिखा था, "पूर्व और दक्षिण में बल्लभगढ़ के राजा नाहर सिंह की मजबूत मोर्चाबंदी है। उस सु.ढ़ सैनिक दीवार को तोड़ना तब तक असम्भव है, जब तक चीन और इंग्लैंड से हमारी कुमुक नहीं आ जाती।"

अंग्रेजों ने अपने कपटजाल से पंजाब के कई राजाओं को अपने विश्वास में ले लिया और उनकी सेनाएं लेकर दिल्ली पर आक्रमण कर दिया। अंग्रेज जानते थे कि पूर्वी और दक्षिणी सीमा पर वे कभी भी नहीं जीत सकते थे। अतः उन्होंने शहर की पश्चिमी और उत्तरी सीमा पर जहां शाही और मेरठ के सैनिकों का पहरा था, वहां से दिल्ली में घुसने का उपक्रम किया। पंजाब से आयी भारी सेना के साथ मिलकर अंग्रेजों ने कश्मीरी गेट पर अपना मोर्चा लगाया। कई दिन तक वहां भारी युद्ध हुआ। अंग्रेजों के भारी तोपखाने से शाही सेना के अनेक

सैनिक खेत रहे। 11 सितम्बर 1857 को तोपों की मार से घबराकर बादशाह का सेनापति खान बहादुर बख्शां पीछे हट गया।

किंतु मेरठ के जांबाज सैनिकों ने इस मोर्चे पर 10 दिन तक अंग्रेजी सेना से लोहा लिया। लेकिन जब 20 सितम्बर को पंजाब की भारी सेना के साथ अंग्रेजों ने इस भाग पर जबरदस्त आक्रमण किया, तो मेरठ के सैनिकों के भी हौसले पस्त हो गये और अंग्रेज उन्हें परास्त कर दिल्ली में प्रविष्ट हो गये। अंग्रेजी सेना क्रांतिकारियों की इस छोटी सी सेना का संहार करती, तेजी से लाल किले की ओर बढ़ गयी।

बादशाह को जब यह समाचार मिला, तो वह डर गये। वयोवृद्ध बादशाह इस आयु में अंग्रेजों के हाथों गिरतार होकर अपना बुढ़ापा खराब नहीं करना चाहते थे। अतः उन्होंने लाल किले को छोड़कर किसी दूसरे सुरक्षित स्थान पर जाने का निर्णय किया।

राजा नाहर सिंह ने बादशाह को सुझाव दिया कि वे बल्लभगढ़ में उनके महल में चलकर रहें, जहां वे अंग्रेजों से आखिरी सांस तक उनकी रक्षा करेंगे।

बादशाह को राजा नाहर सिंह की यह सलाह जंच गयी। वे राजा नाहर सिंह के साथ बल्लभगढ़ चलने के लिए तैयार हो गये।

किंतु अंग्रेजों के वेतनभोगी जासूस इलाहीबख्श ने येन–केन–प्रकारेण बादशाह बहादुरशाह जफर को दिल्ली से बाहर जाने से रोकने के लिए अपने दांव–पेंच फेंकने शुरू कर दिये। इलाहीबख्श ने बादशाह को एकांत में ले जाकर उनसे सरगोशी करते हुए इस बात में राजा नाहर सिंह से सावधान रहने को कहा कि बादशाह स्वयं राजा नाहर सिंह दिल्ली की गद्दी को पाना चाहते हैं।

बादशाह जफर इलाहीबख्श की बातों में आ गये और उन्होंने राजा नाहर सिंह के साथ बल्लभगढ़ जाने से इंकार कर दिया। बादशाह का उत्तर सुनकर राजा नाहर सिंह अवाक रह गये। वे समझ गये थे कि इलाही बख्श ने जरूर बादशाह को कुछ उल्टी पट्टी पढ़ायी थी। बादशाह की जान खतरे में थी। किंतु नाहर सिंह अब कर ही क्या सकते थे। वे चुपचाप बल्लभगढ़ के लिए रवाना हो गये।

नाहर सिंह के जाते ही नमकहराम इलाही बख्श बादशाह को लेकर हुमायूं के मकबरे में पहुंचा और कैप्टन हडसन तक समाचार पहुंचा दिया कि बादशाह हुमायूं के मकबरे में छिपे हैं, अतः वह उन्हें गिरतार करने के लिए अविलम्ब वहां पहुंच जाए। हडसन इलाही बख्श का समाचार मिलते ही फौजी टुकड़ी लेकर हुमायूं के मकबरे में जा पहुंचा। हडसन और सैनिक टुकड़ी देख बादशाह के चेहरे की रंगत उड़ गयी। सारा मामला दिन के उजाले की तरह साफ हो गया था। बादशाह को अब मित्र और विश्वासघाती में अंतर समझ आ गया। किंतु तब तक बहुत देर हो चुकी थी। बाजी पलट चुकी थी। बादशाह को अपने परम मित्र पर अविश्वास करने का दंड हाथों हाथ मिल गया था।

राजा नाहर सिंह को जब भी समाचार मिला कि अंग्रेजों ने बादशाह को हुमायूं के मकबरे में घेर लिया है, तो वे उन्हें तेजी से हुमायूं के मकबरे की ओर दौड़े। उन्होंने मकबरे की मजबूत घेराबंदी कर दी। किंतु हडसन ने राजा नाहर सिंह को धमकी दी कि यदि उन्होंने तुरंत ही मकबरे की घेराबंदी नहीं हटायी, तो बादशाह को तत्काल ही मार डाला जायेगा। नाहर सिंह इस धमकी के आगे विवश हो गये और चुपचाप वहां से हट गये।

हडसन ने बादशाह को गिरतार कर लिया। इस प्रकार 20 सितम्बर 1857 को बादशाह की गिरतारी के साथ ही दिल्ली का पतन हो गया। अंग्रेजों ने दिल्ली में अपनी सेना की लूट और कत्ले–आम करने की छूट दे दी। अंग्रेजी सेना ने लूट और अत्याचार के मामले में नादिरशाह और तैमूर लंग की सेना को भी पीछे छोड़ दिया। दिल्ली और जनता पर इतने भयानक अत्याचार हुए कि मानो रूह कांप उठी। केवल इलाहीबख्श जैसे कुछ आदमियों को छोड़कर दिल्ली के तमाम निवासियों को इस भयानक त्रासदी को भोगना पड़ा। इलाहीबख्श को दिल्ली में बहुत बड़ा इनाम बादशाह से गद्दारी के पुरस्कार स्वरूप हासिल हुआ था।

राजा नाहर सिंह अपनी सेना लेकर वापस बल्लभगढ़ चले गये। किंतु उनके दिल में अभी भी अंग्रेजों के विरुद्ध ज्वाला धधक रही थी। जब उन्हें पता चला कि आगरा–दिल्ली राजमार्ग से होकर अंग्रेजी सेना आगरा से दिल्ली जा रही है, तो उसका गुस्सा उस सेना पर फूट पड़ा और वे उस पर टूट पड़े और सारी सेना को काट डाला। यहीं नहीं उन्होंने पलवल तक का इलाका अंग्रेजों से छीनकर अपने अधीन कर लिया।

अंग्रेजों को लगा कि युवा राजा नाहर सिंह उनके मार्ग का एक बड़ा रोड़ा साबित हो सकता है। दिल्ली को स्वतंत्र करने और उस पर 103 दिन तक अधिकार रखने में सबसे अधिक योगदान राजा नाहर सिंह का ही रहा था। उनकी प्रेरणा से दिल्ली के चारों ओर के जाट तथा दूसरी सभी जातियों के लोग अंग्रेजों के विरुद्ध इस युद्ध में शामिल हुए थे। अतः ऐसे खतरनाक व्यक्ति को तो अंग्रेज किसी भी दशा में सहन नहीं कर सकते थे। वे यह समझ चुके थे कि यदि उन्होंने राजा नाहर सिंह को अपने रास्ते से नहीं हटाया, तो वे क्रांति की आग को कभी बुझने नहीं देंगे और अंग्रेज भारत में चैन से नहीं रह पायेंगे।

राजा नाहर सिंह नामक अपनी राह के इस रोड़े को अपने मार्ग से हटाने का निश्चय कर क्रियान्वित किया। कैप्टेन हडसन ने एक कपट योजना बनाकर एक नवम्बर 1857 को राजा नाहर सिंह के पास झूठा संदेश भेजा कि बादशाह बहादुरशाह जफर और अंग्रेजों के बीच में संधि वार्ता चल रही है। बादशाह की शर्तें हैं कि वे उस संधि को तब तक स्वीकार नहीं करेंगे, जब तक कि राजा नाहर सिंह संधि की शर्तों पर अपनी सहमति नहीं दे देते। अतः राजा नाहर सिंह इस संधि प्रस्ताव में शिरकत करने के लिए अविलम्ब दिल्ली आ जाएं। राजा नाहर सिंह यह संदेश पाकर अपनी छोटी–सी सैनिक टुकड़ी लेकर दिल्ली के लिए चल दिये।

जैसे ही नाहर सिंह ने दिल्ली में प्रवेश किया, छिपी हुई अंग्रेजी सेना ने उनको चारों ओर से घेर लिया और उनकी सेना पर गोलियों की बौछार शुरू कर दी। अचानक हुए इस हमले से राजा नाहर सिंह की सेना घबरा गयी। फिर भी उसने अंग्रेजों का भरसक मुकाबला किया। किंतु अंग्रेजों की भारी सेना के सामने इस टुकड़ी की औकात ही क्या थी? राजा नाहर सिंह के सैनिकों का सफाया हो गया। राजा नाहर सिंह को गिरतार कर लिया गया। इसके अगले दिन राजा के बल्लभगढ़ किले पर अंग्रेजों ने आक्रमण कर दिया और उनके किले को पूरी तरह से नष्ट–भ्रष्ट कर दिया गया।

दिल्ली में अंग्रेजों की विजय दुंदुभी बज रही थी। दूर–दूर तक उनका कोई विरोध करने वाला नजर नहीं आ रहा था। कैप्टेन हडसन ने बादशाह को हर प्रकार से प्रताड़ित करना आरम्भ कर दिया था। उसने दिल्ली दरवाजे के निकट बादशाह के सभी पुत्रों व पौत्रों के सिर काटकर उन्हें मौत के घाट उतार दिया। उसने बादशाह के पौत्रों के कटे सिर थाल में रखकर बादशाह के सामने रख दिये। बादशाह को टूटी बैलगाड़ी और टूटी खाट पर बिठाकर लाल किले ले जाकर कैद कर दिया गया। उनके सामने उनके हरम की स्त्रियों को बुरी तरह अपमानित किया गया। उन्हें बादशाह के सामने ही नंगा तक किया गया।

अंग्रेजों ने राजा नाहर सिंह को ये सभी .श्य दिखाये ताकि उनके दिल में अंग्रेजों के प्रति भय बिठाने का प्रयास किया जा सके। किंतु जाट वीर राजा नाहर सिंह पर इन सब बातों का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। हडसन ने राजा नाहर सिंह से कहा, "माफी मांगिए। हम आपका राज्य और आपको सम्मान वापस देने के लिए तैयार हैं।"

"यदि झुकने से तुम्हारा मतलब माफी मांगने से है, तो मैं तुम लोगों से माफी मांगूंगा?" उन्होंने निर्भीकता से उत्तर दिया, "अंग्रेज भारत के दुश्मन हैं और अपने दुश्मनों के सामने हम कभी नहीं झुक सकते। बेशक मुझे मार दो, मुझे चिंता नहीं। आज एक नाहर सिंह मरेगा, तो कल सौ नाहर सिंह पैदा होंगे। तुम मेरे देश को और अधिक दिन तक गुलाम बनाकर नहीं रख सकते।" उनके वक्तव्य में अंग्रेजों के विरुद्ध नफरत साफ झलक रही थी।

राजा नाहर सिंह के उत्तर से साफ था कि वे अंग्रेजों से किसी भी तरह का कोई समझौता करने के लिए तैयार नहीं थे। अतः अंग्रेजों ने राजा नाहर सिंह को फांसी दे देने का निर्णय लिया। लेकिन राजा नाहर सिंह जैसे लोकप्रिय राजा को फांसी देना कोई साधारण काम न था। अंग्रेजों ने राजा नाहर सिंह को दिल्ली में चांदनी चौक स्थित उनके आवास पर कैद कर दिया और उन पर काल्पनिक अभियोग लगाया गया।

राजा नाहर सिंह पर निम्न आरोप लगाये गयेः–

1. यह कि राजा नाहर सिंह ने अंग्रेजी प्रजा होने के उपरांत भी 16 मई 1857 से 1 नवम्बर 1857 के बीच विद्रोहियों से पत्र व्यवहार किया।
2. यह कि राजा नाहर सिंह ने विद्रोहियों को अंग्रेज सरकार के विरुद्ध विद्रोह करने के लिए उकसाया तथा अपनी पैदल सेना व घुड़सवार सेना भेजकर विद्रोहियों की सहायता की।
3. यह कि राजा नाहर सिंह ने विद्रोहियों को रसद सामग्री तथा हथियार भेजकर सहायता की।
4. यह कि राजा नाहर सिंह ने पलवल में अपने सैनिक भेजकर वहां बलात् गैर–कानूनी तरीके से कब्जा कर वहां अपनी सत्ता स्थापित की और ब्रिटिश सरकार के अधिकारियों तथा पदाधिकारियों को मार भगाया।

राजा नाहर सिंह के ये सभी कार्य भारत की विधि परिषद् द्वारा निर्मित सन् 1857 के अधिनियम के विरुद्ध तथा राजा के प्रत्येक कार्य को ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध अपराध मानते हैं।

अंग्रेजों ने राजा नाहर सिंह को अंग्रेजी साम्राज्य के विरुद्ध विद्रोह करने का दोषी घोषित कर दिया। और 9 जनवरी 1858 के दिन उन्हें फांसी देने का दिन निश्चित कर दिया।

9 जनवरी को चांदनी चौक के फव्वारे पर जाट वीर राजा नाहर सिंह को फांसी देने की प्रक्रिया आरम्भ हुई। पूरी दिल्ली में राजा नाहर सिंह को फांसी दिये जाने की चर्चा थी। लोग स्तब्ध थे। दिल्ली से अंग्रेजों के शासन को उखाड़ फेंकने के लिए अपने प्राणों की बाजी लगा देने वाले उस जाट वीर को देखने के लिए पूरी दिल्ली जैसे उमड़ी पड़ रही थी। लोगों की आंखों में आंसू थे और होठों पर मौन था।

फांसी देने से पूर्व हडसन ने राजा नाहर सिंह से उनकी अंतिम इच्छा पूछी। वीरों के वीर राजा नाहर सिंह ने

हडसन को उत्तर दिया, "मुझे तुमसे कुछ नहीं मांगना है। यदि तुम दे सकते हो, तो मेरे देशवासियों तक मेरा यह संदेश दे दो कि क्रांति की जो चिंगारी मैं उन लोगों के लिए छोड़े जा रहा हूं, वे उसे बुझने न दें। देश का सम्मान अब उनके हाथों में है।"

अलौकिक शौर्य की एक गाथा का समय से पूर्व ही पटाक्षेप हो गया। जाट केसरी राजा नाहर सिंह अपने बलिदान से भारत मां के अमर सपूतों में अपना नाम लिखा गया। उन्होंने मरते–मरते भी जाटों का नाम अमर कर दिया।

उस महान देशभक्त, शौर्य की दैदीप्यमान मशाल, साहस की प्रतिमूर्ति, संगठन निपुण, सच्चे जाटवीर, हरियाणा केहरी राजा नाहर सिंह को समस्त जाट समाज नतमस्तक होकर अपनी श्रद्धा पुष्प अर्पित करता है।

संघर्ष, शिक्षा और उपलब्धियों की प्रेरक डॉ. सरूप सिंह (हुड्डा)

– लक्ष्मण सिंह फौगाट, (मो० 6280830760)

डॉ. सरूप सिंह (1917–2003) का जन्म 9 जनवरी, 1917 को हरियाणा के रोहतक जिले के सांघी गाँव में चौधरी गोर्धन सिंह हुड्डा के घर हुआ था। रोहतक के जाट विद्यालय से दसवीं कक्षा उत्तीर्ण करने के बाद वे उच्च शिक्षा के लिए दिल्ली आए। उन्होंने रामजस कॉलेज से स्नातक और 1940 में अंग्रेजी विषय में एम.ए. की परीक्षा उच्च अंकों के साथ उत्तीर्ण की। 1953 में उन्होंने लंदन विश्वविद्यालय से पीएच. डी. की उपाधि प्राप्त की।

वे दिल्ली विश्वविद्यालय के कुलपति, संघ लोक सेवा आयोग के सदस्य, राज्यसभा सांसद तथा केरल और गुजरात के राज्यपाल रहे। वे एक विद्वान शिक्षाविद, कुशल प्रशासक और साहित्यकार भी थे। डॉ. भीम एस. दहिया द्वारा लिखित उनकी जीवनी "डॉ. सरूप सिंह और उनका समय रू एक उपाख्यानात्मक विवरण" 2007 में प्रकाशित हुई।

डॉ. सरूप सिंह का बचपन कठिन परिस्थितियों में बीता। उनके पिता गोर्धन सिंह ने बहुत कम उम्र में अपने पिता को खो दिया था। उनकी दादी ने अकेले उनका पालन–पोषण किया। बाद में गोर्धन सिंह के कई विवाह हुए, लेकिन उनकी पत्नियों का असमय निधन होता रहा। डॉ. सरूप सिंह की माता का निधन भी तब हो गया था जब वे केवल लगभग एक वर्ष के थे।

उनकी दादी ने उन्हें माँ की तरह पाला। कम उम्र में ही उनका विवाह कर दिया गया। विद्यार्थी जीवन में वे गणित को छोड़कर सभी विषयों में मेधावी थे। गणित के शिक्षक द्वारा बार–बार दंड दिए जाने से उनकी दादी ने उन्हें विद्यालय से निकालने का निर्णय लिया, लेकिन पिता ने शिक्षा जारी रखने पर जोर दिया।

उन्होंने रोहतक के जाट विद्यालय से दसवीं की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की और उच्च शिक्षा के लिए दिल्ली चले गए। रामजस कॉलेज में उनके अंग्रेजी शिक्षक श्री बी.बी. गुप्ता ने उनकी प्रतिभा को पहचाना। एक दिन कॉलेज में छात्रों के बीच विवाद के दौरान उनके व्यवहार से शिक्षक निराश हुए। उन्होंने डॉ. सरूप सिंह को अपने घर बुलाकर उनके व्यक्तित्व, व्यवहार और भविष्य के बारे में समझाया।

यह मुलाकात उनके जीवन में निर्णायक सिद्ध हुई। उन्होंने अपने लक्ष्य ऊँचे किए और कठिन परिश्रम का संकल्प लिया। आर्थिक कठिनाइयों के बावजूद उन्होंने पढ़ाई जारी रखी। उनके संबंधी चौधरी छज्जू राम ने उन्हें ऋण देकर सहायता की।

उन्होंने अंग्रेजी में बी.ए. (ऑनर्स) में द्वितीय स्थान प्राप्त किया और बाद में एम.ए. में प्रवेश लिया। 1940 की अंतिम परीक्षा के दौरान उनकी पत्नी का निधन हो गया। इस व्यक्तिगत आघात के बावजूद उन्होंने परीक्षा पूरी की और प्रथम श्रेणी में सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया।

चौधरी छज्जू राम की सहायता से उन्हें हिंदू कॉलेज में अध्यापन का अवसर मिला। बाद में वे कॉलेज के व्याख्याता बने। 1944 में वे रोहतक के जाट कॉलेज के उप–प्रधानाचार्य बने, लेकिन वहाँ का वातावरण उनके विचारों के अनुकूल नहीं था। जनवरी 1945 में वे पुनः दिल्ली के हिंदू कॉलेज लौट आए।

वे विद्यार्थियों, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों से आने वाले युवाओं के लिए मित्र, दार्शनिक और मार्गदर्शक बन गए। समाजवादी विचारधारा से प्रभावित होकर वे राजनीतिक गतिविधियों से भी जुड़े और 1951 में भारतीय समाजवादी पार्टी की दिल्ली इकाई के अध्यक्ष बने, हालांकि कुछ समय बाद उन्होंने पद छोड़ दिया।

1950 में उनके गुरु श्री बी.बी. गुप्ता ने उन्हें इंग्लैंड जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने की सलाह दी। आर्थिक कठिनाइयों के बावजूद उन्होंने विभिन्न स्रोतों से धन की व्यवस्था की और लंदन विश्वविद्यालय में पीएच.डी. के लिए गए। दो वर्षों के कठिन शोध के बाद उन्होंने अपना शोध प्रबंध पूरा किया और 13 जुलाई, 1953 को मौखिक परीक्षा उत्तीर्ण कर पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की। 18 अगस्त, 1953 को उन्होंने हिंदू कॉलेज में पुनः कार्यभार संभाला। उनकी पीएच.डी. ने उन्हें अकादमिक जगत में विशेष प्रतिष्ठा दिलाई।

1957 में वे किरोड़ीमल कॉलेज के प्रधानाचार्य बने। उन्होंने देश के विभिन्न हिस्सों से योग्य शिक्षकों को कॉलेज

से जोड़ा और शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार किया। उनके नेतृत्व में कॉलेज ने शैक्षणिक, खेलकूद और सांस्कृतिक गतिविधियों में उल्लेखनीय प्रगति की। क्रिकेट और अन्य खेलों में कॉलेज का दबदबा बना तथा नाट्य गतिविधियाँ उसकी पहचान बनीं।

1960 में उन्हें ब्रिटिश काउंसिल फैलोशिप के अंतर्गत लंदन में शोध का अवसर मिला, लेकिन पत्नी की बीमारी के कारण उन्हें भारत लौटना पड़ा। कुछ समय के लिए उन्होंने कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में अंग्रेजी के प्रोफेसर के रूप में भी कार्य किया और बाद में पुनः किरोड़ीमल कॉलेज लौट आए।

1965 में डॉ. सरूप सिंह दिल्ली विश्वविद्यालय में अंग्रेजी के प्रोफेसर और विभागाध्यक्ष बने। यह उल्लेखनीय था कि वे दिल्ली विश्वविद्यालय के ही पूर्व छात्र थे और उसी विश्वविद्यालय में प्रोफेसर बनने वाले पहले पूर्व छात्रों में प्रमुख थे।

उन्होंने अंग्रेजी विभाग के पाठ्यक्रम में अनेक सुधार किए और भारतीय साहित्य की महत्वपूर्ण कृतियों के मानक अंग्रेजी अनुवादों को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया।

वे दिल्ली विश्वविद्यालय शिक्षक संघ के संस्थापक सदस्यों में रहे और बाद में विश्वविद्यालय के प्रॉक्टर तथा प्रो–वाइस–चांसलर बने। प्रशासनिक जिम्मेदारियों के साथ उन्होंने अपने अकादमिक कार्य को भी पूरी गंभीरता से जारी रखा।

प्रोफेसर के.एन. राज के इस्तीफे के बाद डॉ. सरूप सिंह कार्यवाहक कुलपति बने। इस दौरान उन्होंने एक संवेदनशील सांप्रदायिक विवाद को अत्यंत संयम और दृढ़ता से सुलझाया। उनके संतुलित निर्णय की राष्ट्रीय स्तर पर सराहना हुई। 7 जनवरी, 1971 को उन्हें दिल्ली विश्वविद्यालय का कुलपति नियुक्त किया गया और 8 जनवरी को उन्होंने कार्यभार संभाला। यह ऐतिहासिक अवसर था क्योंकि पहली बार दिल्ली विश्वविद्यालय का कोई पूर्व छात्र उसी विश्वविद्यालय का कुलपति बना था।

उनके कार्यकाल में विश्वविद्यालय में कई महत्वपूर्ण विकास हुए। नए भवनों का निर्माण हुआ, शैक्षणिक कार्यक्रमों का विस्तार हुआ, गैर–कॉलेजिएट महिला शिक्षा बोर्ड का पुनर्गठन किया गया और कॉलेजों में प्रशासनिक सुधार किए गए। छात्र आंदोलनों को उन्होंने दृढ़ता और संवाद के साथ संभाला।

उनके कार्यकाल की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धियों में दिल्ली विश्वविद्यालय के दक्षिण परिसर की स्थापना थी। बढ़ती छात्र संख्या को देखते हुए प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी के साथ विचार–विमर्श के बाद दक्षिण परिसर की स्थापना की दिशा में कदम उठाए गए। उनके कार्यकाल में यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ मेडिकल साइंसेज के विकास को भी गति मिली। शिक्षक कल्याण कोष की स्थापना और विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय कर्मचारियों के संगठन को मान्यता भी उनके कार्यकाल की महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ थीं।

विश्वविद्यालय की स्वायत्तता के प्रति वे अत्यंत सजग थे। वे मानते थे कि अकादमिक और प्रशासनिक निर्णय विश्वविद्यालय को स्वतंत्र रूप से लेने चाहिए। इस सिद्धांत पर उन्होंने कई अवसरों पर दृढ़ता से अपना पक्ष रखा।

1974 में उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय के कुलपति पद से इस्तीफा दिया और अमेरिका के इलिनॉय विश्वविद्यालय में अतिथि प्रोफेसर के रूप में कार्य किया। पिता के निधन के बाद वे भारत लौट आए।

लगभग 1975 में उन्हें संघ लोक सेवा आयोग का सदस्य नियुक्त किया गया। वहाँ उन्होंने ग्रामीण पृष्ठभूमि से आने वाले उम्मीदवारों के मूल्यांकन में उनकी सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों को ध्यान में रखने पर जोर दिया। 1978 में वे जनता पार्टी के उम्मीदवार के रूप में राज्यसभा के लिए चुने गए। 1984 तक उन्होंने राज्यसभा में प्रभावशाली भूमिका निभाई। विशेष रूप से शिक्षा से जुड़े मुद्दों पर उनके विचार दलगत राजनीति से ऊपर उठकर होते थे।

इसी दौरान उनकी साहित्यिक गतिविधियाँ भी जारी रहीं। उनकी पुस्तक "शेक्सपियर एंड फैमिली रिलेशनशिप इन द रेस्टोरेशन कॉमेडी ऑफ मैनर्स" प्रकाशित हुई। सेवानिवृत्ति के बाद दिल्ली विश्वविद्यालय ने उन्हें प्रोफेसर एमेरिटस का सम्मान दिया।

1984 में उन्होंने रोहतक से लोकसभा चुनाव लड़ा, लेकिन श्रीमती इंदिरा गांधी की हत्या के बाद बने राजनीतिक माहौल में वे चुनाव हार गए। उन्होंने हार को सहजता से स्वीकार किया और पुनः अकादमिक तथा साहित्यिक गतिविधियों में सक्रिय हो गए।

उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय और जामिया मिल्लिया इस्लामिया में अध्यापन किया। 1988 में उनकी तीसरी पुस्तक "द डबल स्टैंडर्ड्स इन शेक्सपियर एंड रिलेटेड एसेज" प्रकाशित हुई। वे जनता दल के गठन में भी सक्रिय रहे और महत्वपूर्ण राष्ट्रीय मुद्दों पर एक अनुभवी मार्गदर्शक की भूमिका निभाते रहे।

1989 में जनता दल के सत्ता में आने के बाद डॉ. सरूप सिंह को केरल का राज्यपाल नियुक्त किया गया। उन्होंने संवैधानिक मर्यादाओं, संयम और निष्पक्षता के साथ अपना दायित्व निभाया। सरकार और विपक्ष दोनों के साथ उनके संतुलित व्यवहार ने उन्हें सम्मान दिलाया।

बाद में वे गुजरात के राज्यपाल बने। वहाँ भी उन्होंने राजनीतिक परिस्थितियों में संयम और अनुभव का परिचय दिया। उनके प्रति सभी राजनीतिक वर्गों में सम्मान बना रहा।

कभी भी असफलता से घबराऐं नहीं क्योंकि सफलता की शुरुआत हमेशा असफलता से ही होती है।

राज्यपाल रहते हुए भी उनका साहित्यिक लेखन जारी रहा। उनकी चौथी पुस्तक "मैरेज इन द इंग्लिश नॉवेल ऑफ द एटीनथ सेंचुरी" 1995 में प्रकाशित हुई, जिसका अधिकांश लेखन गुजरात प्रवास के दौरान हुआ। 1995 में उन्होंने गुजरात के राज्यपाल पद से इस्तीफा दे दिया और 6 अगस्त, 2003 को उनका स्वर्गवास हो गया।

डॉ. सरूप सिंह का जीवन संघर्ष, शिक्षा, परिश्रम, दृढ़ता और कर्तव्यनिष्ठा का अद्‌भुत उदाहरण है। अत्यंत कठिन पारिवारिक और आर्थिक परिस्थितियों से निकलकर उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में सर्वोच्च उपलब्धियाँ प्राप्त कीं और आगे चलकर विश्वविद्यालय प्रशासन, राजनीति, साहित्य तथा संवैधानिक पदों पर अपनी विशिष्ट पहचान बनाई। वे व्यवहार में अत्यंत सरल, सौम्य और मृदुभाषी थे, लेकिन सिद्धांतों और संस्थागत स्वायत्तता के प्रश्न पर अत्यंत दृढ़ रहते थे। अपने विद्यार्थियों के लिए वे केवल शिक्षक नहीं, बल्कि मित्र, दार्शनिक और मार्गदर्शक थे।

उनका जीवन यह संदेश देता है कि कठिन परिस्थितियाँ प्रतिभा और दृढ़ संकल्प के सामने टिक नहीं सकतीं। शिक्षा, परिश्रम, सही मार्गदर्शन और सिद्धांतों के प्रति निष्ठा के बल पर व्यक्ति न केवल अपने जीवन को बदल सकता है, बल्कि समाज और राष्ट्र के लिए भी स्थायी योगदान दे सकता है।

डॉ. सरूप सिंह का व्यक्तित्व आने वाली पीढ़ियों के लिए आज भी प्रेरणा का स्रोत है।

चौ. छोटूराम से जुड़े कुछ किस्से

– सूरजभान दहिया (मो० 9818120950)

सन् 1941 में चौ. छोटूराम ने पंजाब विधान सभा में सामान्य बिक्रीकर को पंजाब में लागू करने का प्रस्ताव रखा। इस कर के प्रस्ताव पर विधानसभा में विरोधी सदस्यों ने यह आपत्ति उठाई कि ऐसा कर तो उन्होंने कभी देखा न सुना है। इस बिल पर अकालीदल के विधानसभा सदस्य सरदार प्रताप सिंह कैरो ने भी भाग लिया। कैरो की दलीलों का जवाब देते हुये चौधरी साहब ने कहा– "मेरे अजीज अकाली दल के युवा सदस्य ने यू.एस.ए. में मिशीगन तथा बरकली जैसी नामी विश्व विद्यालयों से उच्च शिक्षा ली है तथा यू.एस.ए. की फार्मिंग पद्धति से काफी प्रभावित भी हैं। मैं चाहता हूं कि ऐसी युवा प्रतिभा धार्मिक उन्माद में न उलझे और पंजाब में भी अमेरिकी पद्धति की कृषि अपनाने में मेरा साथ दें। मै यहां उल्लेख करना चाहूंगा कि अमेरिका के 29 राज्यों, यूरोप के 12 देशों और ब्रिटिश सरकार के तीन उपनिवेशों में ऐसा कर लगा हुआ है।"

चौ. छोटूराम की इस बिल पर तर्कसंगत व मार्मिक बहस से प्रभावित हुये सरदार प्रताप सिंह कैरो ने अकाली दल से त्यागपत्र दे दिया तथा वे कांग्रेस पार्टी में शामिल हो गये। सरदार प्रताप सिंह आजादी के पश्चात् 1958 में पंजाब प्रान्त के मुख्यमंत्री बने तथा मुख्यमंत्री पद संभालते ही उन्होंने चौ. छोटूराम के पद चिन्हों पर चलकर पंजाब देहात में कृषि उत्थान तथा ग्रामीण रोजगार की कारगार नीति अपनाई। देहाती युवाओं को skill training दी तथा अमेरिका, इंग्लैण्ड, कनाड़ा, आस्ट्रेलिया आदि देशों में इन्हें भेजने का सिलसिला शुरू किया। जब मैं डी.ए.वी कॉलिज जालंधर में 1964 में छात्र था तो मैं अपने दोस्त के साथ दिसंबर की छुट्टियों में उनके गांव में गया था। मेरे दोस्त के पिता ने मेरा परिचय जानना चाहा। मैनें जब उन्हें बताया कि मै रोहतक जिले के गांव का एक किसान का बेटा हूं। तब उनकी आत्मा से तसल्ली भरे शब्द निकले "चौ. छोटूराम जैसा किसान नेता नही हो सकता। कैरो साहब भी थोड़े समय निक्का छोटूराम बने परन्तु सियायत में चौ. छोटूराम न बन सके।"

घटना सन् 1973 की है और मैं हरियाणा सरकार में कार्यरत था। मैं दिल्ली से चंड़ीगढ हरियाणा सरकार में कार्यरत था। मैं दिल्ली से चंड़ीगढ हरियाणा रोड़वेज में जा रहा था। उस समय रोडवेज में दूसरी सीट एम.एल.ए/एम.पी. के लिए आरक्षित होती थी। आरक्षित सीट पर एक सज्जन बैठे थे। निःसन्देह एम.एल.ए या एम.पीं होगें। बस चाय–पानी हेतु करनाल रूकी। नीचे उतरने के पश्चात् मैनें माननीय सदस्य को नमस्कार किया तथा फिर विदित हुआ कि वे होडल से एम.एल.ए. चौ. राजेन्द्र सिंह है। बस फिर गन्तव्य की ओर बढ़ी, चौ. राजेन्द्र सिंह अपनी सीट पर अकेले बैठे थे, उन्होंने मुझे अपनी सीट पर बुला लिया। बातों बातों में पला चला कि वे लाहौर में पढ़े थे। फिर मैने उनसे चौ. छोटूराम के बारे में कुछ जानना चाहा। उन्होंने मुझे एक रोचक किस्सा सुनाया। चौ. छोटूराम लगातार विधानसभा में किसान हितैषी कानून पास कर रहे थे जिससे शहरी लोग बडे आक्रोशित थे। वे सुबह–सुबह चौ. छोटूराम के खिलाफ प्रभात फेरियां निकालते थे। जब वे "शक्ति भवन" चौ. छोटूराम का निवास स्थान के सामने आते तो जोर–जोर से कहने लग जाते – "ओ केहडी माई जिसनूं जम्मा छोटूराम कसाई" फिर चौ. राजेन्द्र सिंह ने मुझे बताया "एक दिन अम्बाला डिवीजन के लड़कों ने एक मीटिंग बुलाकर यह फैसला लिया कि कल सुबह जब शहरियों की प्रभात फेरी शक्ति भवन आयेगी और वे चौ. छोटूराम के विरूद्ध नारे लगायेंगे तो उनकी हम हॉकी स्टीकों से धुनाई करेंगे। इस प्लान में हमारे साथ कुछ मुसलमान दोस्त भी जुड़ गये। हम तय प्लान अनुसार सुबह–सुबह हाकियों के साथ शक्ति भवन पहुंच गये।"

अक्सर शक्ति भवन जाते रहते थे। जब हमारी हाकियों के साथ टोली को हरि सिंह–खेड़ी जाट ने देखा तो उसने चौ.

छोटूराम को सारा किस्सा बता दिया। चौ. छोटूराम हमारे पास आये और कहने लगे "तुम ऐसा कुछ नही करोगे। ये शहरी हार के मारे बौखला गये हैं। मैने अपनी कलम से इनका जीना हराम कर रखा है तडपने दो इन्हे, तुम अपनी पढ़ाई करो, आगे तुमने ही मेरी जिम्मेदारी संभालनी है।"

चौ. राजेन्द्र सिंह ने आगे मुझे बताया 24 अप्रैल, 1944 को लायलपुर में अखिल भारतीय जाट महासभा का सम्मेलन हुआ था। उसमें भारी भीड़ जुटी थी। सभी धर्मो के किसान छात्रों का हमारा एक सक्रिय युवा संगठन था। हमने यह निर्णय ले लिया था कि इस महासम्मेलन में जिन्ना के कायदे आजम की तरह चौ. छोटूराम को रहबरे आजम (महान लीडर) के खिताब से सम्मानित करेंगे। किसान छात्र संगठन ने यह प्रस्ताव भारी भीड़ के समझ स्टेज से रखा। यह प्रस्ताव छात्र मोहम्मद रफीक तरार ने रखा था और इसका अनुमोदन मैनें (चौ. राजेन्द्र सिंह) किया था। प्रस्ताव ध्वनि मत से पारित हुआ तथा चौ. छोटूराम को रहबरे आजम को सम्मान देकर पगड़ी बांधी तथा पूरा माहौल रहबरे आजम चौ. छोटूराम जिन्दाबाद के नारे से गूंज उठा।

यहां यह भी बताना उचित होगा कि बाद में मोहम्मद रफीक तरार पाकिस्तान के राष्ट्रपति भी बने। चौ. हरिसिंह, खेड़ी जाट (झज्जर) जौ लाहौर में शक्ति भवन में रहते थे, बाद में हमारे गांव निलोठी के हरियाणा वैदिक हाई स्कूल में अध्यापक रहे थे, उस समय में कदाचित, कक्षा पांच का छात्र था। बाद में मै उनके सम्पर्क में चंडीगढ़ तथा गुरूग्राम में रहा।

उन्होंने एक बार मुझे डी.ए.वी कॉलेज लाहौर का किस्सा सुनाया। उन दिनों में ज्यादातर हरियाणा के छात्र डी.ए. वी कॉलेज में पढ़ते थे। एक बार हरियाणा के छात्रों ने निर्णय लिया कि चौ. छोटूराम छात्रों को डी.ए.वी कॉलेज किसान मसीहा का सम्मान दिया जाये। यह प्रस्ताव लेकर हरियाणा छात्र संगठन चौ. छोटूराम से मिलने शक्तिमान पहुंचा तथा उन्हें कॉलेज में छात्रों को संबोधन करने की अनुमति मांगी। चौ. छोटूराम ने छात्रों के निवेदन को स्वीकार कर लिया।

अगले दिन चौ. छोटूराम के संबोधन के बारे में डी.ए.वी. कॉलेज के नोटिस बोर्ड पर सूचना लगा दी। नोटिस पढ़कर शहरी छात्रों में बैचेनी हो गई तथा बात फैल गई कि वे चौ. छोटूराम की मीटिंग में हूंटिंग करेंगे। यह बात हरियाणा छात्र संगठन के पास पहुंच गई तथा उसमें कुछ असमंजस की स्थिति उत्पन्न हो गई और एक अनिश्चितता की वातावरण बन गया। हरियाणा छात्र संगठन के अध्यक्ष चौ. मनीराम गोदारा ने (जो बाद में हरियाणा गृहमंत्री) इस संबंध में चौ. छोटूराम को अवगत करा लिया। चौ. छोटूराम ने छात्रों को उत्साहित करते हुये कहा "घबराने की कोई बात नही। मैं जरूर कॉलेज में छात्रों को संबोधित करूंगा तथा उन्हें इस स्थिति से निपटने की विधि भी समझाई। हरियाणा छात्र संगठन ने रणनीति के तहत हाल के चारों दरवाजे पर दो–दो छात्र खड़े कर दिये। हाल में बीच–बीच में हरियाणा के छात्रों को पहले भी बैठा दिया था। बाद में शहरी छात्र भी आकर बैठ गये। ज्यों ही चौ. छोटूराम हाल में पहुंचे, चारों दरवाजे बन्द कर दिये। जब स्टेज से चौ. छोटूराम ने बोलना शुरू किया तो शहरी छात्रों ने हूंटिंग शुरू कर दी। चौ. छोटूराम ने छात्रों को समझाया कृपया आप मेरी बात सुने, यदि आपको कोई संशय मेरे संबोधन से उत्पन्न हो, मै उसका उत्तर आपको दूंगा। आपको शान्त होने के लिये मै दो मिनट का समय दे रहा हूं। दो मिनट के बाद भी शहरी छात्रों की हूंटिग जारी रही। फिर चौ. छोटूराम ने हरियाणा छात्र संगठन को आदेश दिया इन्हें आप अपना तरीका अपनाकर शान्त करवाये। बस फिर क्या था, बीच में बैठे हरियाणा छात्राओं ने चार पांच जगह शहरी छात्रों को गले से पकड़ कर ऊंचा उठा कर पटका तो चन्द सेकेंडों में वातावरण शांत हो गया। चौ. छोटूराम वहां लगभग एक घंटा बोले। बाद में शहरी छात्र संघ के प्रेजीडेंट स्टेज पर आये तथा चौ. छोटूराम से क्षमा मांगी तथा कहा – "हम गलतफहमी के शिकार थे। चौधरी साहब आपके संबोधन में प्रेरणा थी तथा हम अपने उज्ज्वल भविष्य हेतु आपकी बातों का अनुसरण करेंगे। हम पुनः आपको जरूर इस हॉल में आमन्त्रित भी करेंगे।"

चौ. छोटूराम ने अपना सम्पूर्ण जीवन शोषित वर्ग के उत्थान हेतु लगा दिया तथा उनकी सेवा करते–करते 9 जनवरी 1945 को वे प्रातः 11:15 बजे शक्ति भवन लाहौर में महाप्रस्थान कर गये। अगले दिन 10 जनवरी को दोपहर 2:00 बजे चौधरी साहब के भाई चौधरी नेकीराम ने जाट हाई स्कूल रोहतक के ग्रांउड में दाह संस्कार की अग्नी चेतना की। दाह–संस्कार के मौके पर उपस्थित स्त्री–पुरूष बिलख–बिलख कर रो रहे थे हाय, हमारा "छोटाराम" चला गया। मृत्यु से लोग शोक संतप्त थे।

चौधरी खेमचन्द राठी नाम एक व्यक्ति ने तो चौधरी साहब की जलती चिता में कूदकर आत्मदाह करने का प्रयास भी किया था। गनीमत रही कि वहां उपस्थित जनसमूह ने भागकर उसे पकड़ लिया और उसे बचा लिया। बाद में चौधरी खेमचन्द राठी एक प्रेरक अध्यापक बने। सरकारी सेवानिवृत्ति के पश्चात् वे डी.ए.वी. हाईस्कूल, हसनगढ़ (रोहतक) में पुनः अध्यापक रहे। मैं भी इस स्कूल में 1968 में साइंस टीचर के पद पर कार्यरत था तथा मैं वहां चौधरी खेमचन्द राठी के संपर्क में आया। उनसे मेरी चौ. छोटूराम के जीवन के संबंध काफी चर्चा होती रहती थी।

चौ. खेमचन्द राठी, चौ. हरिद्वारी लाल के बड़े करीब थे, चौ. हरिद्वारी लाल हरियाणा में शिक्षा मंत्री रहे थे। एक बार उन्होंने मुझे हरिद्वारी लाल के संबंध में एक किस्सा सुनाया। चौ. हरिद्वारीलाल चौ. छोटूराम के वजारतकाल में पी.सी.एस. अफसर थे। वे एक बार माल तथा तकावी हिसाब–किताब चैक करने के लिए तलागंग तहसील के मुख्यालय जाने हेतु टूर पर थे। यह

जिला कैम्पबलपुर की तहसील थी। इस तहसील मुख्यालय पर जाने के लिए उन्होंने एक नाला पार करना था। इस नाले को पार करने हेतु नौका का सहारा लेना पड़ता था। चौ. हरिद्वारीलाल ने इस नाले को पार करने के लिए किसानों की नौका की मदद चाही तो किसानों ने बडी रकम मांगी। चौ. हरिद्वारा लाल ने जो किराया मांगा वह देने की हा भी भर दी। जब किसान नाला पार करवा रहे थे तो वे चौ. हरिद्वारी लाल से पूछ बैठे "आप कौन से जिले के हैं?" चौ. हरिद्वारी लाल ने उत्तर दिया– "मैं रोहतक जिले का हूं।" नाला पार करने के पश्चात् चौ. हरिद्वारी लाल ने किसान को नौका किराया देने हेतु हाथ बढ़ाया। किसान ने कहा– "मै आप से किराया नहीं लूंगा। आप चौ. छोटूराम की पाक जमीन से हैं जिन्होंने छोटे खुदा का रूप लेकर किसान को नरक की जिन्दगी से निकाला है। हमें छोटे खुदा के दर्शन तो नही हुये परन्तु आपके दर्शन ही हमने उनके दर्शन, मान लिये हैं, खुदा हाफिज।" यह किस्सा मैनें बाद में चौ. हरिद्वारीलाल के 'द ट्रिब्यून' में 28 जून, 1997 को छपे लेख में पढ़ा था।

Economic progress during Nehruvian Era

- R.N.Malik, (Mob. 9911078502)

The present government has been earnestly trying since 2014 to hold Jawaharlal Nehru responsible for all the ills facing the country today. But this allegation is a total travesty of truth. Rather it was Nehru who laid the strong foundations of modern India and extricated the nation out of dire poverty.

India attained independence on 15th August 1947.and Nehru became the first Prime Minister of India. First five years were lost in tackling the intractible communal problems, rehabilitation of crores of refugees, integration of 565 princely States, drafting and adopting a new Constitution and holding elections of Parliament and State Assemblies. This involved humongous administrative work. Consequently, duly elected/ constituted governments (both at the centrr and states) started working from March 1952. Accordingly, the country started moving along the path of planned progress from that month.

Economic landscape of the country at the time of independence was almost barren. The total power generation capacity was only 1350 MW. Britishers had built some barrages across some major rivers and taken out the canals for irrigation of the agricultural lands. The railway network was only 45000 km. sporadic industrial hubs existed at Ahmedabad, Bombay and Calcutta. Tata Iron works plant was located at Jamshedpur. The foreign exchange reserves were only 1.8 billion dollars and exchange rate with dollar was ?4.76 per dollar. Power generation by 1952 reached upto 1750 MW only.

Jawaharlal Nehru was a well read statesman. He had developed a scientific temper and vision of economic development through a planned process even before 1947 and knew his priorities very well. He knew in advance that the backbone of India's progress would be agriculture and backbone of a sound agricultural system would be availablability of irrigation water and power generation. His other priorities were industrial development, ecosystem of power distribution, education, health and the attendant infrastructure projects. The initiation of infrastructural projects in the aforesaid fields constituted the durable engine of growth.

But Nehru strode on a path of planned progress in the able company of his cabinet collegues even with the background of dismal economic scenario. His Finance Minister was C.D.Deshmukh and planning expert was V.T.Krishnmachari (later Deputy Chairman Planning Commission constituted in 1953).

I. Irrigation and power generation:-

Jawaharlal Nehru had the brain of an astute Irrigation Engineer. He knew that Irrigation water could be made available in adequate quantity only by building multipurpose storage dams to serve the tripple purpose of irrigation, flood control and power generation. Therefore, soon after becoming the Prime Minister, he gave " go ahead" signal to execute five multipurpose storage dam projects in the year 1948 itself. These were Damodar Valley, Bhakra dam, Rehand dam , Tungbhadra dam and Hirakund dam projects. All these five were mega-power projects. He also directed the Planning Commission and Central Water Commission (these bodies had different names before their constitution in 1953) to start planning other similar Mega- projects across other rivers as well. As a result construction work started on the following projects during 1950s.

1. Yelder dam, Pochampadu dam and Balimela dam across Godavri river.
2. Koyna dam, Bhadra dam, Srisailam dam and Nagarjuna Sagar dam across river Krishna.
3. Ramganga dam across river Ganges and Gandhisagar dam across Chambal river.

Damodar Valley Corporation built four dams by 1957 with a total power generation capacity of 215 MW. Tilaya dam in present Kuderma district of Jharkhand State was inaugurated in July 1953 itself and the joy of farmers of that district knew no bounds when irrigation water reached their fields. Konar dam was commissioned next year in Hazaribagh district. Likewise, water of both Tungbhadra dam and Hirakund dam was released in newly built canals in 1957. Rehand dam was commissioned in 1962 and majestic Bhakra dam one year after. Work on Nagarjuna Sagar dam started in 1954

स्वार्थ बड़ा बलवान है, इसी कारण कभी–कभी मित्र शत्रु बन जाता है और शत्रु मित्र।

and the dam with 25km long earthen banks with live storage capacity as big as 6.92 bcm was commissioned in 1967. Koyna dam with a power station of 6.40 MW was commissioned in 1964. The final power generation capacity of this project was 1960 MW. By 1970, the combined capacity of hydropower plants was around 5000 MW and combined capacity of thermal and Hydropower plants was 14000 MW.

Both Nehru and the Planning Commission made the mistake of ignoring the construction of thermal power plants simultaneously with the same gusto. A 110 MW thermal power plant could be built in just 3-4 years with lesser investment to prop up power generation capacity and promote industrialization.

Tata Group took the lead to commission the first unit of 62.5 MW thermal power plant at Trombay in 1956. The capacity was augmented to 400 MW by 1965 to supply regular power to Bombay. Inderprastha thermal power plant of 36 MW commissioned in the year 1963 at Delhi and was augmented to 245 MW by 1971. First 95 MW unit of Badarpur thermal power plant was commissioned in 1973. In Haryana, the first 60 MW unit of Faridabad thermal power plant was commissioned in 1974. In Panjab, the first 110 MW unit of Bhatinda thermal power plant was commissioned the same year in 1974

36 MW Paras was the first thermal power plant in Maharashtra that was set up at Akola in 1961. On the eastern side, Damodar Valley Corporation took the lead in setting up four thermal power plants after completing Hydropower projects. Valleys provided the ideal site for setting up thermal plants as they consume lot of water. Many Megapower plants were set up near Singhrauli after the construction of Rehand dam in 1962.

The first unit of 45 MW thermal power plant was commissioned at Bokaro in 1953. The capacity was augmented to 175 MW by 1960. 140 MW Chanderpura thermal power plant was commissioned in 1959 on the bank of Konar tributary. Likewise, 60 MW power plant at Durgapur was commissioned in 1960; 45 MW Barauni thermal power plant was commissioned in 1963 with the help of Yogoslavian assistance. Its capacity was increased to 200 MW by 1970-71. Biggest state of U.P. was equally laggard in this respect. The first unit of Obra thermal power plant was set up as late as in 1967.

The accelerated progress of setting up thermal power plants started after 1975. First unit of 110 MW of 1350 MW thermal power complex at Panipat was commissioned in 1978. GOI set up the National Thermal Power Corporation (NTPC) in November 1975 that made tremendous strides in setting up big thermal power plants in India and got Navratna status in 1997. It played a pivotal role in taking the country towards self-sufficiency in the power sector.

2. Steel plants:-

Nehru realised that industrial and infrastructural progress could not be attained without mega steel manufacturing plants. At the time of independence only Tata's mega steel plant at Jamshedpur met the needs of steel in the country. Its manufacturing capacity for crude and finished steel was 8 lac tonnes per annum which was later augmented to 1.2 mt per annum. Nehru managed to get international cooperation to set up four mega steel plants in 1955.

I. Bhilai Steel plant near Durg in Chhattisgarh state was commissioned in 1959 with Russian aid and know-how. This plant met the need of supplying rail girders. Its present capacity is 7.0 mpta.

2. Rourkela steel plant too was set up near Sundergarh town in Orrisa the same year. Its present capacity is 3.80 mpta. This plant was with German collaboration.

3. Durgapur Steel plant was also set up in 1959 with the collaboration of U.K.Government. Its present capacity is 2.2 mpta.

4. Bokaro steel plant was set up in 1972 with Russian assistance using mostly indigenous technology and is called Swadeshi steel plant. Its present capacity is 4.0 mt per annum.

Three more steel plants were set up at Salem in Tamilnadu, Vizag and Bhadravati in Karnataka by Steel Authority of India. In the private sector, only Jindals (JSW)came forward in this line.

3. Development of Atomic and nuclear energy program:-

Jawaharlal Nehru had developed a scientific bent of mind. He had told his staff that three scientists namely Dr. Homi J.Bhabha, Dr. Vikram Sarabhai and Dr. Shanti Swaroop Bhatnagar needed no appointment to meet him. Others were feeling jealous of this special privilege accorded to three scientists.

Dr.Homi J.Bhabha (1909-1966) was the father of Atomic and Nuclear energy program in India. The program made rapid strides under the guidance of both Dr.Bhabha and Dr. Vikram Sarabhai. The first baby step in this direction was to set up the Atomic Energy Commission led by Dr.Homi Bhabha in 1950. The mattel fell on the shoulders of Dr. Vikram Sarabhai after the accidental death of Dr.Bhabha during the crash of Air India plane Kanchanjanga at Alps on 24th January 1966.

The sole motive of the Commission was to carry on research on the use of atomic and nuclear energy for peaceful purpose and attain self-reliance. This was followed by creation of Department of Atomic energy in 1954. The next milestone was the development of first Nuclear Research Reactor Apsra in 1956 at Trombay Mumbai.. The facility was later named as Bhabha Atomic Research Centre (BARC)

The Atomic Energy Commission was headed by Dr. .Vikram Sarabhai after 1966. Long term planning of Dr.Bhabha was to develop a technology to harness nuclear power from Thorium whose reserves in India were available in ample quantity. Dr.Sarabhai took up that lead and directed the research program towards developing nuclear energy to run electric power plants. Consequently, he was able to set up the Fast Breeder Test Reactor at Kalpakam in Tamilnadu. On 6th April this year, the Prototype Fast Breeder Reactor (PFBR) touched the headlines in newspapers when it attained the first criticality (starting a selfsustaing nuclear chain reaction) at Kalpakam thus advancing India into the 2nd stage of the 3-stage nuclear power program.

Simultaneously, Dr. Sarabhai played a pioneering role in developing space program for India and is rightly called the father of India's Space Program. He was instrumental in setting up INSCOPAR (Indian National Committee for Space Research -- a precursor to setting up full blown Space Research Centre at Ahmedabad on 15th August 1969 known as ISRO or Indian Space Research Organisation. He was also instrumental in setting up first Physical Research Laboratory at Delhi in 1947 and Rocket launching station at Thumba in Kerala(that helped in developing first space rocket Aryabhat) and also establishing Satellite Instructional Television Experiments (SITE) with NASA. His four other pioneering contributions are setting up IIM Ahemdabad, Electronic Corporation of India, Ahemdabad Textile Industry's Research Association and Vikram Sarabhai Space Centre (VSSC) at Trivandrum. The centre researches the use of electronics and avionics in space research and development. All this was possible because both Dr.Bhabha and Dr. Sarabhai had the full backing of Nehru Ji because of their cost relations with him.

4. Educational advancement:-

Jawaharlal Nehru strongly believed in educational advancements as the key to national progress. The development of scientific and technological temperament in the country was the backbone of his educational vision. Accordingly, premier educational institutes were opened both at Central and State levels between 1952 and 1965 in the background of tight financial position. All the State Chief Ministers like Dr.B.C.Roy and Mohanlal Sukhadia were statesman like people in those days. They also took pains to set up Medical and engineering colleges, new universities and agricultural Institutes in their respective states. For example, Sardar Partap Singh Kairon set up two Agriculture Universities (Hissar and Ludhiana), two new Medical colleges (Patiala and Rohtak) and one engineering college at Chandigarh in the earstwhile Panjab. As a result, the number of Medical colleges in the country increased from 17 to 85 between 1950 and 1965.

At the Central level, the most creditable achievement in the educational field was to set up five premier engineering institutes known as Indian Institutes of Technology (IITs) at Kharagpur, Chennai, Bombay, Kanpur and Delhi together with two premier Medical Institutes at Delhi and Chandigarh namely AIIMS and PGIMER. University Grant Commission was set up in 1956 to fund institutes of higher education. The Visav Bharti education institute at Shantiniketan was given the status of a Central University. G.B.Institute of Agricultural science and technology was set up at Pantnagar. Bhabha Atomic Research Centre and Defence Research and Development Organisation (DRDO) were also set up at Trombay and Delhi. Another important milestone was to set the Council of Scientific and Industrial Research (CSIR) at Delhi which further set up a network of national laboratories and research centres in different parts of the country. For examples the famous National Environment Engineering Research Institute (NEERI) Nagpur and Central Salt and Marine Chemicals Research Institute Bhavnagar were the babies of CSIR Advanced school of Agriculture was set up under the control of Indian Agriculture Research Institute (IARI). All these institutions formed the core of modern education. All this happened over a-period of just 12 years.

5. Indian Railways:-

Total route km length of railway network in India at the time of independence was 45000 route km. Considering the bullwark of rebuilding a new integrated rail network, Jawaharlal Nehru appointed Fateh Chand Badhwar as the Chairman of Railway Board in 1951. He was an engineer of the technical wing of Engineering service. He rose equal to the task and played a pioneering role in rebuilding a durable rail network. He was honoured with Padam Bhushan. The first major administrative step was to integrate the fragmented railway network of colonial and princely states into six zones. Practice of presenting separate railway budget in the Parliament was also introduced. Unfortunately, this practice was stopped in 2014.

4000 km new railway lines were laid by 1965. Work on double tracking of busy routes was also initiated in parts. Some small routes had already been electrified with D.C.supply. It was converted into 25 KVA A.C.supply with the consultancy of French Railways to ensure international standards.. Process of Electrification of tracks also started.on the 110 km Railway track between Howrah and Burdwan and was electrified by 1961. Electrification work on similar stretches was also in vogue on other busy routes.

Integral Coach Factory (ICF) Chennai for building railway coaches was established in 1956. Chitaranjan Loco works Howrah was set up to manufacture steam engines in 1950. A big railway workshop was set up at Nangal dam.

The process of replacing steam engines with diesel engines also started in 1960.

To be continued.

वैवाहिक विज्ञापन

- SM4 Jat Girl (DOB 11.09.97) 28/5'4" B.Sc., M.Sc. from MDU. B.Ed. CTET. Preparing for government job. Father & mother retired from government service. Own house in Rohtak. Avoid Gotras: Gill, Sangwan, Khatri. Cont.: 8053576293, 9416657051
- SM4 Jat Girl (DOB 17.10.99) 26/5'3" M.A. Geography. B.Ed. Library Diploma. CTET qualified. Father Hindi Government Teacher. Mother housewife. Avoid Gotras: Siwach, Goyat, Sangwan. Cont.: 9466473177
- SM4 Jat Girl (DOB 01.10.94) 31/5 feet. MBA H.R. Father in Chandigarh Police. Family living in Panchkula. Avoid Gotras: Hooda, Dalal, Lakra. Cont.: 8283000022
- SM4 Jat Girl (DOB 20.06.2000) 26/5'1" B. Com, B.Ed. Father businessman. Avoid Gotras: Lakra, Malik. Cont.: 9216000072
- SM4 Jat Girl (DOB 29.11.94) 31/5'7" B.Sc. and MA Economics from MCM DAV College for Women Chandigarh. Working as (CE) in Air India Chandigarh. Salary Rs. 13 LPA. Father's own business (Book Shop). Mother housewife. Own residence and own shop in Chandigarh. Avoid Gotras: Pahal, Malik, Sehrawat. Cont.: 9988407607
- SM4 Jat Girl 26/5'1" Master in Fashion Management from NIFT. Father businessman. Mother housewife. Avoid Gotras: Sangwan, Ola, Lamba. Cont.: 9813309321
- SM4 Jat Girl (DOB 11.01.2002) 24/5'3" J.B.T. (first year). Deaf & Dump 100%. Father farmer. Mother housewife. Avoid Gotras: Malik, Suhag, Lathwal. Cont.: 7837332515
- SM4 Jat Girl (DOB 24.12.96) 29/ 6 feet Master in Law (LLM) and hons. In BALLB fro Uttranchal University, Dehradun. Currendly practicing as Advocate in Punjab & Haryana High Court, Chandigarh. 65 acre agriculture land in village. Family residence at Panchkula. Avoid Gotras: Nehra, Bhadu, Beniwal. Cont.: 9466535300
- SM4 Divorced Jat Girl 36/5'5" Employed as government Doctor, doing M.D. Reputed family. Preferred MBBS+MD or Class-I Officer. Cont.: 8901491517
- SM4 Jat Girl (DOB 28.10.98) 27/5'4" B.A. LLB (O. P. Jindal University). Profession Advocate. Working with International Law Firm. Salary Rs. 3 lac per month (36-40 LPA). Father Advocate in Punjab & Haryana High Court Chandigarh. Mother Senior Officer, General Manager in a Corporation of Haryana. Family settled at Panchkula. Preferred IAS/IPS/Judicial Officer or well established professional/Businessman from reputed family background. Avoid Gotras: Badhran, Goyat, Maan. Cont.: 9417203810
- SM4 Jat Girl (DOB 20.05.99) 27/5'5" BB.A. LLB, LLM from Kurukshetra. NET qualified. Practicing as Advocate in District Court Kurukshetra. Father farmer. Mother Housewife. Agriculture land 17 acre. Avoid Gotras: Bajwa, Dalal, Bal. Cont.: 9416172852
- SM4 Jat Girl (DOB 11.02.98) 28/5'5" M. A. English from Punjab University, Computer Diploma, B.Ed., CET qualified. Working in Private Company at Mohali. Father retired Superintendent from Haryana Government. Mother House wife. Preferred match Chandigarh/Tricity. Family settled at Zirkpur (Punjab). Avoid Gotras: Dahiya, Balyan. Cont.: 6239058052
- SM4 Jat Girl (DOB 01.05.94) 31/5'2" M.A. English from Punjab University. JBT. B.Ed. from Punjab University. CTET-tgt. Thrice, HTET-jbt. Four times, HTET-pgt. Twice, TET-jbt. Twice. Working as Government primary teacher in Punjab near Chandigarh. Father Deputy Manager in HMT. Pinjore. Mother housewife. Avoid Gotras: Sangwan, Phogat, Pilania. Cont.: 9416869289
- SM4 Jat Girl (DOB 28.02.93) 31/5feet. B. Tech. in Computer Science, Diploma in Computer Science, M. Tech. in Software Engineering. Working in reputed MNC at Chandigarh. Salary Rs. 8 LPA. Father retired Divisional Head Draftsman from Haryana government. Mother housewife. Family settled at Panchkula. Avoid Gotras: Malik, Deswal, Sheoran. Cont.: 9417333298
- SM4 Jat Boy (DOB 15.11. 95) 30/ 6 feet. B.Tech CSC. Working as Senior Manager at Novartis Hyderabad. Package Rs. 55 LPA with hybrid job. Father retired from Air Force. Mother housewife. Own house at Zirakpur (Punjab). Avoid Gotras: Lakra, Malik, Mann. Cont.: 7989389447
- SM4 Jat Boy (DOB 02.02.97) 29/ 12th Medical and Non-medical, M.A. (History). Working as Collection Manager in HDFC Bank. Avoid Gotras: Pawar, Siwach, Ahlawat. Cont.: 9317958900
- Suitable match for Jat Boy (DOB 23.03. 2001) 26/6'2" B. S. in Information Science from The university of Texas at Arlington & M. S. in Finance from Southern Methodist University, Dallas, Texas. Working in Finance in New York City as Associate. Father DPRO in Haryana Government. Mother housewife. Preference: willing to settle Abroad. Paternal family from Bhiwani (Haryana). Avoid Gotras: Goyat, Sheoran, Chahal. Contact: 7696232605
- SM4 Jat Boy (DOB 03.08.99) 27/ B. A. History (Hons.) from GTB Khalsa College, D.U. LLB, LLM from Faculty of Law, DU. Private International Law, International Court of justice, Netherlands. Law & A.I. from Landon School of Economics. Now practicing in Punjab & Haryana High Court Chandigarh. Residence in Chandigarh. 8 acre agriculture land, flat in Delhi, Farm House and Shop (Commercial property) in Samalkha. Avoid Gotras: Phour, Malik, Khatri. Cont.: 9466095995, 9416640442.
- SM4 Jat Boy (DOB 29.09.92) 33/5'8" PhD. Structural Engineer. JRF. Seven time Gate qualified. Working as Visiting Faculty DCRUST. Father Associate Professor of Physics in Jat College, Rohtak. Mother Government School Principal Retired. Own resident at Rohtak. Avoid Gotras: Gill, Dahiya, Ahlawat. Cont.: 9416193949
- SM4 Jat Boy (DOB 10.05.99) 27/5'10" M. A. from D.U. Diploma Health Inspector. Employed as Constable in Haryana Police. Father in Government service. Mother housewife. Brother in Chandigarh Police. Avoid Gotras: Sangwan, Ahlawat, Jangu. Cont.: 9718720065
- SM4 Jat Boy (DOB 27.04.93) 33/6'2" B. Tech from Punjab Technical University. Working as Clerk in High Court Chandigarh. Father after retirement working in Air Force and Haryana Education Department. Mother retired teacher. Avoid Gotras: Malik, Kundu, Dalal. Contact:7340867216
- SM4 Jat Boy (DOB 06.11.98) 27/5'9" B. A. M.A. D-Pharmacy. Own Pharmacy shop. Father farmer. Mother housewife. Three acre agriculture land. 150 gaj plot in Rohtak, 200 gaj plot in village. Avoid Gotras: Phaugat, Rana, Tehlan. Cont.: 9306403477
- SM4 Jat Boy (DOB 16.04.98) 28/5'8" Employed in Judicial

अनुभव एक महान शिक्षक है, इसलिये गलतियों से डरो नहीं, उनसे सीख लो।

Department as Clerk at Tarn Taran. Father retired from HSVP. Mother housewife. Own house in Panchkula. Avoid Gotras: Kundu, Mehlawat, Joon. Cont.: 9877797632

- SM4 Jat Boy (DOB 27.07.98) 28/5'4" B. Tech. in Computer Science from Kurukshetra University. Post Graduate Diploma in Cloud Computing from Loyalist College, Canada. Working as Food Supervisor in Toronto (Work Permit). Father Medical Shop in Ambala. Mother in Government job. Elder sister married, settled in Canada. Avoid Gotras: Mor, Panwar. Cont.: 7015484270, 9416002852
- SM Jat Boy 6'0"/13.12.1998, B.A., M.A. (MDU Rohtak), working with IDFC First Bank Pvt. Ltd., Gohana (Sonepat). Father (Late), Mother Homemaker receiving family pension; Father was a Govt. employee. One brother, working in private job. Agriculture land: 5 acres. Avoid Gotra: Gill, Siwach, Ahlawat. Cont.: 9812919970
- SM4 Jat Boy (DOB 21.08.95) 31/5'9" B. Tech. in Mechanical Engineering. Working as Manager Digital Marketing in a reputed MNC at Pune. Salary Rs. 12 LPA, Freelancing business. Father retired from PGIMER Chandigarh. Mother housewife. Own house in Chandigarh. Avoid Gotras: Dabas, Sangwan, Dhankhar. Cont.: 9779132009
- SM4 Jat Boy (DOB 20.10.96) 29/5'9" Graduate & Post graduate from S.D. College Chandigarh. Occupation: Business. Father Businessman. Mother housewife. Own house in Panchkula. Avoid Gotras: Panghal, Moond, Sangwan. Cont.: 7986350696
- SM4 Jat Boy (DOB 11.03.95) 31/5'9" B. A. Employed in Indian Railways, Technician-I, Group-C. Father expired in Indian Railways. Mother pensioner (Indian Railways). Avoid Gotras: Suhag, Dhankar, Hooda. Cont.: 7837332515
- SM4 Jat Boy (DOB 13.02.96) 30/5'8" B. Tech. from PICT (Pune). P. G. from DAC Pune. Working as Software Engineer in Lowe's Banglore. Package Rs. 22 LPA. Father retired Honorary Flying Officer. Mother housewife. Family settled in Zirakpur. Avoid Gotras: Khatkar, Chahal, Saharan. Cont.: 9101241162
- SM4 Jat Boy (DOB 03.10.94) 31/5'11" B. Tech. Software Engineer. Income Rs. 18 LPA. Father Professor retired. Mother housewife. Family settled at Chandigarh. Avoid Gotras: Tomar, Malik. Cont.: 9463742136
- SM4 Jat Boy (DOB 18.10.2003) 22/5'8" Education 12th. Working in Taj Hotel Sector 17 Chandigarh. 2.5 acre agriculture land. 4 marla Koti in Chandigarh. Father's self work. Mother housewife. Family settled at Raipur Khurd (Chandigarh). Avod Gotras: Beniwal. Cont.: 8699113516
- SM4 Divorced Jat Boy (DOB 25.02.91) 35/ 6 feet. Graduate from Punjab University Chandigarh. Self Employed in Chandigarh (Book Shop). Income 15-20 lakh Per Annum. Own residence and won shop in Chandigarh. Father's own business (Book Shops). Mother housewife. Avod Gotras: Pahal, Malik, Sehrawat. Cont.: 9988407607
- SM4 Jat Boy (DOB 15.11.2000) 25/5'4" M. Pharma, MBA. Working as Junior Research Scientist in Mankind Pharma, Gurugram. Income Rs. 4.5 LPA. Father S.R. Director in MNC, Banglore. Mother housewife. Own house at Banglore, Hyderabad, Gurugram. Avoid Gotras: Thaken, Sangroha, Kadyan. Cont.: 9780683938
- SM4 Jat Boy (DOB 27.06.2002) 24/5'5" B.Tech., MBA. Working as Assistant System Engineer in TCS, Banglore. Income Rs. 4 LPA. Father S.R. Director in MNC, Banglore. Mother housewife. Own house at Banglore, Hyderabad, Gurugram. Avoid Gotras: Thaken, Sangroha, Kadyan. Cont.: 9780683938
- SM4 Jat Boy (DOB 07.04.96) 30/5'8" Ph.D. (Pursuing). Business University of the Camberlands (USA). MBA topper School of Business Camegie Mellon University USA. B. Tech. (CSE) Jaypee University of Information Technology Solan, India. Profession: Accelerated Leadership Program (Marketing Manager) Pro-Active USA, Product Manager: Edge AI Remote. Avoid Gotras: Nara, Dangi. Cont.: 9416950002
- SM4 Jat Boy (DOB 09.01.80) 36/5'7" B.E. in Electrical & Communication. MBA in General Management. Working as Associate Director, Management Consulting Company-ForvisMazars. Income RS. 35.5 lakh per year. Father retired Doctor. Mother retired Teacher. Own house in Panchkula, Banglore. Avoid Gotras: Phogat, Lamba, Ahlawat. Cont.: 9900107055
- SM4 Jat Boy (DOB 20.10.92) 30/5'5" Graduate. Doing private job. Father retired from Government job. Mother in private job. Family settled at Chandigarh. Avoid Gotras: Lamba, Nandal, Ghalyan, Cont.: 7696771747
- SM4 Jat Boy (DOB 06.11.98) 27/5'9" B.A., MA, D.Pharmacy. Job: Pharmacy Shop. Three acre agriculture land. One plot in Rohtak. Avoid Gotras: Phogat, Rana, Tehlan. Cont.: 9306403477
- SM4 Jat Boy (DOB 29.03.99) 27/5'7" Post Graduate in Psychology. Serving in Indian Navy at Mumbai. Salary Rs. One lakh PM. Father businessman. Mother housewife. Family settled at Panipat (Haryana). Avoid Gotras: Ahlawat, Mor, Malik. Cont.: 9466701215
- SM4 Jat Boy (DOB 09.11.98) 27/ 6 feet. MA, History. Employed as Clerk in Haryana Government on regular basis. Avoid Gotras: Pattar, Gill, Nehra. Cont.: 8264141578
- SM4 Jat Boy (DOB 14.10.98) 27/5'9" B.Sc. Medical, B.Ed. (Biological Science). CTET, HTET cleared. Employed in Chandigarh Police. Father's self car sale, purchase business. Family settled at Ganaur (Sonepat). Avoid Gotras: Chhikara, Deswal, Malik. Cont.: 9518002197, 8813970974
- SM4 Jat Boy (DOB 11.01. 2003) 23/5'9" B.A., B.Ed., M.Sc. in Geography. Father farmer. Mother housewife. 5.6 acre agriculture land. Avoid Gotras: Dahiya, Suhag, Dabas. Cont.: 7837332515
- SM4 Jat Boy (DOB 09.09.97) 28/6 feet. B. Tech. Computer Science. MBA. Working as Software Engineer in Rocket Software Pune. Permanent work from home. Package Rs. 25 LPA. Father retired Supervisor from HMT Pinjore. Mother housewife. Own Coaching Institute--Banakura Classes. Agriculture land 4.5 acre. Family settled at Pinjore. Avoid Gotras: Bankura, Maan. Cont.: 9354839881
- SM4 Jat Boy (DOB 13.12.96) 29/5'7" Employed as Excise Inspector GST Department Ujjain (Bhopal Zone) M.P. Father in private sector. Mother housewife. Preferred Government job in Madhya Pradesh/Chhatisgarh. Avoid Gotras: Kandola, Nain, Dalal. Cont.: 9416339570
- SM4 Jat Boy (DOB 18.05.96) 29/5'10" B. Tech. PDM Bahadurgarh. Master (Finance) from Whu Otto Beisheim College Germany. Working as Equality Analyst in Kanou Capital New Delhi MNC, Headquarter in London (U.K.) Package Rs. 18 LPA. Father retired from Army, now Clerk in Oriental Bank of Commerce. Avoid Gotras: Dalal, Kadyan, Dahiya. Cont.: 8708370617
- SM4 Jat Boy (DOB 25.12.97) 28/5'8" Bachelor of Commerce. Working as Assistant Manager in IDBI Bank. Avoid Gotras: Sangwan, Kaswa, Jangu. Cont.: 9068574655

हमें जिन पर गर्व है

Indian Boxing Shines Bright at the Commonwealth Games!



जाट की छोरी ने रच दिया इतिहास!

हरियाणा के जींद जिले के गांव राजपुरा भैण की लाडली बेटी प्राची लोहान ने **Commonwealth Fencing Championships** 2026 में शानदार प्रदर्शन करते हुए 2 स्वर्ण पदक और 1 कांस्य पदक सहित कुल 3 पदक अपने नाम कर देश और प्रदेश का मान बढ़ाया है।

प्राची लोहान ने U-23 Women's Épée में स्वर्ण, Senior Women's Épée में कांस्य और Senior Women's Team Épée में स्वर्ण पदक जीतकर अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया।



श्री गुलाब अंतिल (आजीवन सदस्य, जाट सभा चण्डीगढ़/पंचकूला) पुत्र स्वर्गीय चौ. टीका राम जी, ग्राम असावरपुर, जिला सोनीपत

स्वतंत्रता दिवस 15 अगस्त 2026 के अवसर पर पंजाब के माननीय राज्यपाल एवं चंडीगढ़ प्रशासक श्री गुलाब चंद कटारिया जी द्वारा श्री गुलाब अंतिल जी को उनकी उत्कृष्ट पुलिस सेवा के लिए Meritorious Reward से सम्मानित किया गया।



ASI गुलाब अंतिल जी ने अनेक महत्वपूर्ण Cyber Fraud मामलों की जांच में उल्लेखनीय भूमिका निभाई, जिसमें कई आरोपियों की गिरफ्तारी हुई तथा 9 विदेशी/नाइजीरियन आरोपियों से जुड़े मामलों में भी महत्वपूर्ण सफलता प्राप्त हुई। उनके द्वारा की गई प्रभावी जांच के परिणामस्वरूप कई मामलों में न्यायालय से सजा भी हुई।

शिक्षा, प्रशिक्षण एवं पुलिस सेवाकृहर क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन और पूर्ण कर्तव्यनिष्ठा उनकी पहचान रही है।

उपरोक्त सभी की उम्मदा उपलब्धि पर जाट सभा चण्डीगढ़, पंचकूला एवं चौ0 छोटूराम सेवा सदन कटरा–जम्मू के समस्त कार्यकारिणी तहदिल से अभिनन्दन व आभार व्यक्त करते है और इनके व समस्त परिवारों के सुखद स्वास्थ्य एवं मंगलमय भविष्य के लिये परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करते है।

खुद पर भरोसा रखें, क्योंकि आपका हौसला ही आपकी सबसे बड़ी ताकत है।

आर्थिक अनुदान की अपील



जैसा कि आपको विदित है कि जाट सभा चण्डीगढ़ द्वारा गांव नोमैई, ग्राम पंचायत कोटली बाजालान, कटरा–जम्मु में 10 कनाल भूस्थल पर दीनबंधु चौ० छोटूराम यात्री निवास के नाम से एक विशाल बहुमंजलीय भवन का निर्माण किया जायेगा। यात्री निवास के निर्माण, विस्तार व रख–रखाव आदि पर वर्ष 2019 से अब तक लगभग 2,73,61,634 (दो करोड़ तिहत्तर लाख इकसठ हजार छह सौ चौंतीस) रुपये की राशि खर्च हो चुकी है और लगभग 76,47,200 (छिहत्तर लाख सैंतालीस हजार दो सौ) रुपये अनुदान के तौर पर प्राप्त हुये। इसके बावजूद आप सब के सहयोग से यात्री निवास स्थल पर शौचालय व बाथरूम सहित पांच वातानुकुलित डबल बैड कमरों व 15 बैड की डोरमैट्री के निर्माण से यात्रियों के ठहरने व विश्राम हेतु अस्थाई तौर पर उचित व्यवस्था कर दी गई। यात्रियों की सुविधा के लिये भोजन की व्यवस्था हेतू कैन्टीन का निर्माण कर दिया गया है।

इस प्रस्तावित यात्री भवन के निर्माण में कुछ स्थानीय प्रशासनिक व भूगोलिक तकनीकी दिक्कते आ रही है। इसलिये बुहमंजलीय भवन का निर्माण कार्य प्रशासन की स्वीकृति मिलते ही शुरू कर दिया जायेगा और हमें पूर्ण विश्वास है कि आप सभी के सहयोग व माता वैष्णों देवी की कृपा से इस विशाल प्रोजैक्ट का निर्माण अवश्य पूरा होगा।

अतः आप सभी से नम्र निवेदन है कि इस कल्याणकारी व पुनित सामाजिक कार्य के लिए स्वेच्छा अनुसार अनुदान देने की कृपा करें। यदि कोई दानी सज्जन यात्री निवास में कमरे के निर्माण हेतु 5 लाख रूपये या इससे अधिक की राशि दान देता है तो उसका नाम भवन परिसर में उचित स्थान पर अंकित किया जाएगा। यात्री निवास भवन के लिए अनुदान देने वाले सज्जनों का उचित विवरण रखा जाएगा और उनका नाम सभा द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका 'जाट लहर' में भी प्रकाशित किया जाएगा। इसके अलावा भवन निर्माण हेतू 11,000 रुपये या अधिक राशि देने वाले सभी दानी सज्जनों का अनुदान बोर्ड यात्री निवास परिसर में शीघ्र लगाया जा रहा है। भवन निर्माण की अनुदान राशि चैक, डिमांड ड्राफ्ट द्वारा 'जाट सभा चंडीगढ़' के पक्ष में जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, मध्य मार्ग, चंडीगढ़ में भेजी जा सकती है अथवा आर.टी.जी.एस की मार्फत सीधे जाट सभा के बचत खाता नंबर 50100023714552, आईएफएससी कोड– एचडीएफसी 0001324 में ट्रांसफर की जा सकती है। अनुदान की राशि आयकर अधिनियम की धारा 80–जी के तहत आयकर से मुक्त है।

निवेदक : कार्यकारिणी जाट सभा चंडीगढ़/पंचकुला,
चौधरी छोटू राम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

सम्पादक मंडल

सरंक्षक एवं सम्पादक : डा. एम.एस. मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत)
सह–सम्पादक : डा॰ राजवन्तीमान
साज सज्जा एवं आमुख : श्री आर. के. मलिक
प्रकाशन समिति : श्री बी.एस. गिल, मो० : 9888004417
श्री जे.एस. ढिल्लो, मो० : 9416282798
वितरक : श्री प्रेम सिंह, कार्यालय सचिव, जाट भवन, चण्डीगढ़

जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, चण्डीगढ़
फोन : **0172-5086180, M-9877149580**
Email: jat_sabha@yahoo.com; Website: www.jatsabha.org

सर छोटूराम जाट भवन, सैक्टर–6, पंचकूला
फोन : 0172–2590870,M-9467763337
Email: jatbhawan6pkl@gmail.com

चौधरी छोटू राम सेवा सदन, कटरा, जम्मू M-9320693332

Postal Registration No. CHD/0107/2024-2026

RNI No. CHABIL/2000/3469

मुद्रक प्रकाशन एवं सरंक्षक सम्पादक डा. एम. एस. मलिक ने जाट सभा, चंडीगढ़ के लिए एसोसियटिड प्रिन्टर्ज़, चंडीगढ़, फोन : 0172–2650168 से मुद्रित करवा कर जाट भवन, 2–बी, मध्यमार्ग, सैक्टर 27–ए, चंडीगढ़ से प्रकाशित किया।